ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -26 | जनवरी - I - 2024 | अंक - 19 | माउण्ट आबू | Rs.-12

सरदार वल्लभभाई पटेल मेमोरियल ऑडिटोरियम में आशीर्वाद फाउंडेशन द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह

राजयोगिनी चंद्रिका दीदी को 'धरती रत्न' पुरस्कार से किया सम्मानित

इस कार्यक्रम में भारत सरकार के संगीत नाटक अकादमी के उपाध्यक्ष पद्मश्री जोरावरसिंह जादव, पूर्व राजस्व मंत्री कौशिकभाई पटेल, मोंटे कार्लो लिमिटेड के अध्यक्ष कनुभाई पटेल, सत्य साईंबाबा अस्पताल के ट्रस्टी कंचनभाई जावेरी, आशीर्वाद फाउंडेशन के अध्यक्ष आर. एस. पटेल तथा ट्रस्टी डॉ. के. एम. पटेल, कवि माधव रामानुज और कई गणमान्य नेता, विभिन्न क्षेत्र के महानुभाव तथा विशिष्ट नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

अहमदाबाद। सरदार वल्लभभाई पटेल मेमोरियल ऑडिटोरियम में आशीर्वाद फाउंडेशन द्वारा आयोजित 'धरती रत्न पुरस्कार वितरण समारोह' में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ महादेवनगर सेवाकेन्द्र की संचालिका,संस्थान के कला एवं संस्कृति प्रभाग की अध्यक्ष तथा युवा प्रभाग की उपाध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी को 'धरती रत्न' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। साथ ही मानव सेवा के लिए कार्य करने वाली 14 अन्य विभूतियों को भी इस सम्मान से सम्मानित किया गया। स्वास्थ्य एवं सेवाओं के क्षेत्र में 47 वर्षों से कार्य कर रहे आशीर्वाद फाउंडेशन के इस समारोह में राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने वाले लोगों का सम्मान करना समाज का कर्त्तव्य है। ऐसे सम्मान से दूसरों को भी सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। राज्यपाल ने कहा कि अन्न का एक दाना धरती में मिलकर अनेक अनाज पैदा करता है, मानव सेवा के प्रति समर्पित लोग सुंदर समाज का निर्माण करते हैं। उन्होंने धरती रत्न पुरस्कार से सम्मानित महानुभावों को उनके कार्यों के लिए बधाई दी और ऐसे सेवा कार्यों को सच्ची मानवता बताते हुए कहा कि दूसरों के दर्द को अपने दिल में महसूस कर पाना, अपनी आँखों से दूसरों के लिए आंसू बहाना और परोपकार के लिए जीना ही जीवन की सार्थकता है। राज्यपाल देवव्रत ने कहा कि श्री राम, श्री कृष्ण, महात्मा गांधी, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद आदि आज भी अमर हैं, यह उनके श्रेष्ठ कर्मों का ही परिणाम है। अच्छे कर्मों से बड़ी कोई पूंजी नहीं है। अच्छे कर्मों का फल सुख और बुरे कर्मों का फल दुःख और परेशानी है।

मुख्यमंत्री खट्टर ने किया नशा मुक्त हरियाणा अभियान का शुभारंभ, कहा...

ब्रह्माकुमारी बहनों की प्रेरणा और शक्ति से सहज होंगे नशे से मुक्त युवा

पानीपत-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर के 11वें वार्षिक समारोह एवं नशा मुक्त भारत अभियान के तहत 'नशा मुक्त हरियाणा अभियान' का माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने शुभारंभ किया। सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री महोदय ने अभियान चलाकर ब्रह्माकुमारीज़ ने बड़ी सराहना का कार्य किया है। इस श्रेष्ठ कार्य में जब ब्रह्माकुमारी बहनें आगे आएंगी तो उनकी प्रेरणा और शक्ति से नशा करने वाले युवा सहजता पूर्वक इससे मुक्त होंगे। डॉ. प्रताप मिड्ढा,डायरेक्टर ग्लोबल हॉस्पिटल,माउण्ट आबू ने बताया कि

मुख्यमंत्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी सरला दीदी व ब्र.कु. भारत भूषण भाई।

कहा कि जो युवा गलत दिशा में जा रहे हैं उनको बचाने के लिए सबके सहयोग की आवश्यकता है। पूरे समाज के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती है। उन्होंने आगे कहा कि राजयोग मेडिटेशन अपने आप में एक ऐसी पद्धति है जिससे सहज ही इन व्यसनों से मुक्ति पाई जा सकती है। परमात्मा के साथ लगन इस नशे की आदत से दूर कर सकती है। इसलिए ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को ध्यान-योग के मार्ग पर लाने का प्रयास किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान भारत सरकार के साथ मिलकर इस अभियान के तहत देश के कोने-कोने में जाकर सेवाएं दे रहा है। राज्यसभा सांसद कृष्ण लाल पवार ने शुभकामनायें देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की समाज के कल्याण में अहम् भूमिका है। कार्यक्रम में पानीपत रिफाइनरी के कार्यकारी निदेशक एम. एल. डारिया, बचन सिंह आर्य,पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर,हरियाणा सहित 1000 से अधिक भाई-बहनें शामिल हुए। ज्ञान मानसरोवर निदेशक राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण ने सभी का हृदय से स्वागत किया। संस्थान की उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने मुख्यमंत्री को शॉल एवं ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित किया। ब्र.कु. पुष्पा दीदी,कैथल एवं ब्र.कु. दीया बहन, ओआरसी ने भी शुभकामनायें दी। मंच संचालन ब्र.कु. शिवानी बहन ने किया।

ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर के 11वें वार्षिकोत्सव पर नशा मुक्ति अभियान का आगाज

अभियान के तहत स्कूल, कॉलेज व यूनिवर्सिटी में जाकर युवाओं को करेंगे जागरुक

दादी चंद्रमणि यूनिवर्सल पीस ऑडिटोरियम का उद्घाटन एवं मनमोहिनी भवन का मुख्यमंत्री ने किया शिलान्यास

ऑडिटोरियम में 2200 से ज़्यादा लोगों के बैठने की है सुविधा

फिल्म सिटी नोएडा में '16वां नेशनल वुमेन एक्सीलेंस अवॉर्ड 2023'

'शक्ति लाइफटाइम अवॉर्ड' से ब्र.कु. कोकिला दीदी को किया सम्मानित

नोएडा-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस के उपलक्ष्य में फिल्म सिटी सेक्टर 16 ए नोएडा उत्तर प्रदेश में आयोजित '16वें नेशनल वुमेन एक्सीलेंस अवॉर्ड 2023' के अवसर पर सर्वप्रथम ब्रह्माकुमारीज़ के सहज राजयोग शिक्षण केन्द्र पंजाबी बाग,दिल्ली की मुख्य निदेशिका ब्र.कु. कोकिला दीदी को योग के क्षेत्र में विशेष योगदान और अथक प्रयासों के लिए 'शक्ति लाइफटाइम अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया।
इस अवसर पर कोकिला दीदी ने नारी का अर्थ (न+अरी) अर्थात् जिनका कोई दुश्मन नहीं बताते हुए सभी को शांत, पवित्र व शक्ति स्वरूप से राजयोग का अभ्यास कराते हुए गहन शांति व आत्म अनुभूति कराई । देश भर से अनेक सम्माननीय महिलाओं को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया। मारवाह स्टूडियो, नोएडा में आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. संदीप मारवाह,एशियन एकेडमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन और नोएडा फिल्म सिटी के संस्थापक-अध्यक्ष, मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा 'मैं इस दुनिया को 'शुभ मंगलम' अर्थात् सतयुग बनाना चाहता हूँ। अवॉर्ड लेने वाले सभी को मुबारकबाद देते हुए उन्होंने कहा कि ये वह लोग हैं जो मेहनत करके कुछ करना चाहते हैं। यह सभी इस अवॉर्ड के हकदार हैं। लक्ष्मी ठाकुर ने कार्यभार संभालते हुए मंच का संचालन किया।

संकल्प को शक्ति बनायें

एक कॉलेज का विद्यार्थी जो चाहता था वो उसे नहीं मिला, वो बन नहीं पाया जो बनना चाहता था। वो हताश होने लगा, वो मन से हार गया। वो इतना निराश हो गया कि उसके मन में संकल्प चलने लगे कि अब मुझे जीना नहीं है। पढ़ाई तो उसने कर ली लेकिन मन से वो हार गया। तो महत्त्व ज़्यादा किसका हुआ? मन की शक्ति का। तो मन को शक्ति कहां से मिले? मन की शक्ति बढ़ेगी अपने घर से। घर में भी वो ऊर्जा कैसे पैदा होगी? हमारे बोलचाल के शब्दों से।

आपने सुना होगा, पेड़-पौधों पर भी हमारी शक्ति का असर पड़ता है। हम सब ने ये अनुभव किया है। सिर्फ सुना नहीं है, अनुभव भी किया है। एक बार की बात है, हमारे ब्रह्माकुमारीज़ के एक सेवाकेन्द्र पर आम का पेड़ था। बहुत फल आते थे उसमें। और वहां आश्रम में दो छोटी बहनें रहती थीं, वो बोलती रहती थीं कि इतने सारे फल आते हैं, हम किसको दें, किसको न दें, किसको भेजें, इसमें ही हमारा समय चला जाता है। हम दो ही बहनें हैं, थक जाते हैं। ऐसे सामान्य बोल बोलती रहती थीं।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

उनका कोई विशेष भाव भी नहीं था। लेकिन दूसरे साल उस पेड़ में फल आये ही नहीं। और तीसरे साल में भी नहीं आये। वे सोचने लगीं कि ये फल क्यों नहीं आ रहे हैं! फिर उन्होंने आंगन में उस आम के पेड़ के नीचे बैठकर मेडिटेशन किया कि फल आ जायें। ऐसे रोज़ अभ्यास किया। तो उसमें फल आ गये। अच्छे फल आये। तो ये असर हुआ हमारी शक्ति का। ये है हमारी संकल्प की शक्ति। ये हमारे संकल्पों का प्रकृति पर असर है।

इसी तरह आप अगर प्रयोग करना चाहते हैं तो अपने घर में दो पौधे रखें। दोनों को पानी दें नियमित रूप से। एक पौधे को ऐसे ही दें और एक पौधे को जैसे कि बात करते हुए कि ये बहुत अच्छा है, इसमें फल आयेगा। तो आप देखेंगे कि जिसे आप प्यार देते हुए पानी देते थे, उसका विकास अच्छा होगा। आप करके देखें।

लेकिन ये सब सम्भव तब है जब हमारे अंदर इंटेंशन अच्छा हो और साथ-साथ शब्द भी। तो अवश्य ही उसके ऊपर प्रभाव पड़ता है। उसके लिए हमें एक छोटी-सी विधि सीख लेनी चाहिए, जो भी हम सोचें उसमें दूसरों के प्रति कल्याण की भावना, आगे बढ़ाने की भावना, उनका अच्छा हो, वे अपने मकसद में कामयाब हों, इस तरह से इंटेंशन रखकर हम संकल्प करते हैं तो अवश्य ही वो तो आगे बढ़ेगा ही लेकिन उनकी दुआएं हमें भी मिलेंगी और हमारी भी साथ-साथ उन्नति होगी। उसी तरह यदि आपका बच्चा पास नहीं हुआ या अपने मकसद में कामयाब नहीं हुआ, तो उस पौधे(बच्चे) को भी हमें अच्छे वायब्रेशन देकर, अच्छे संकल्प देकर ऊँचा उठाना है ताकि वो आगे सफल हो जाये। ऐसी ऊर्जा हमारे परिवार में और दूसरों के प्रति निरंतर करते रहना चाहिए, जिससे न सिर्फ प्रकृति बल्कि आपसी सम्बंधों में भी समरसता रहेगी। ये सब है संकल्प शक्ति की कमाल। हमारे संकल्प कभी भी व्यर्थ न हों। हर संकल्प में दुआएं हों। ऐसे अभ्यास कर अपने आप को सशक्त करते हुए दूसरों को भी शक्ति दे सकते हैं। हमारी शक्ति लॉस होती ही है निगेटिव और व्यर्थ संकल्पों में। इससे हमें बचना है।

वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है

जितना तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का ऑर्डर है। बाकी कोई ऑर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा- उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक बंधा हुआ होना चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह अभी आंसू बहा रहे हैं। रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पेनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनिया से हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग। जिसने नींद का त्याग किया, उसने सब त्यागा। 3:30 बजे मीठी नींद आती। बाबा कहता उठ। वह भी बाबा ने छीन लिया, बाकी क्या चाहिए। इसलिए हमेशा बाबा कहता बेहद के वैरागी बनो। जितना वैरागी उतना योगी रहते।

सेवा तो आप लोग कर ही रहे हो। जो कुछ भी है उसे सफल करते चलो। कल का क्या पता। जितना बुद्धि में सेवा है, उनका ही महान भाग्य है। परन्तु सेवा के जोश के साथ-साथ होश भी चाहिए।

लौकिक को भी थोड़ा चलाना, करना ठीक रहता। नहीं तो सर्विस में डिससर्विस हो जाती। जितना सर्विस में बुद्धि लगी रहे उतना अच्छा है, आर्टिकल लिखो, डायलॉग लिखो, अनुभव लिखो, आर्टिस्ट बनो। किसी न किसी कार्य में बुद्धि लगी रहे। सब आर्ट सीखो, वक्त पर सब काम आता है।

अगर सेवा में फोर्स है तो कुमारों के कारण, कुमार अपना तन भी लगाते, मन भी लगाते, धन भी लगाते। सभी सेन्टर्स की यह रिज़ल्ट है। आप कुमार सब चिन्ताओं से मुक्त हो। कुमार-कुमारी माना संगम के जीवनमुक्त। कोई बन्धन नहीं। वृत्ति में मेरा बाबा, वायुमण्डल में वायब्रेशन है सब बाबा के बनें, कल्याण की भावना है। जीवन है बाबा की सेवा में। हम-आप दुनिया के वायुमण्डल, वायब्रेशन से मुक्त हैं। हम दुनिया को बाबा के वायुमण्डल में बांधते हैं।

आप सब 100 प्रतिशत लकी हो। आप सबको सर्विस के लिए बाबा ने अपनी भुजायें बनाया है। आप सब समर्पण हो। अगर आप धन से सेवा नहीं करते तो सर्विस नहीं बढ़ती। आप यह नहीं सोचो हमें बाबा ने नौकरी का बन्धन दिया। आप धन से सहयोग न दो तो सेन्टर कैसे चले! आपका पूरा तन-मन-धन बाबा के प्रति है। आप 100 कमाओ उसमें 25 माँ-बाप को, 25 अपने लिए तो 50 बाबा के कार्य में लगाओ। यही सोचो मैं बाबा के कार्य के लिए 5 टका कमाने गया हूँ। दुनिया ही गन्दी है। गन्दों के बीच हमें अपनी रूहानियत में रहना है क्योंकि बाबा के लिए कमा रहा हूँ। लौकिक माँ-बाप ने पाला है उनको भी सहयोग देना मेरा फर्ज़ है। धन को परसेन्टेज से ज़रूर बाँटो।

जो कुमार अपने हाथ से पकाकर खाते हैं, मैं उन्हों को अपने से भी बड़ा मानती हूँ। आप धन्य हो। अगर सूखी रोटी खाकर चलते, तो बाबा आपको मदद देगा। आप दो रोटी खाओ बाबा की मस्ती में रहो। ऐसे नहीं सोचो रोज़-रोज़ ऐसे कैसे होगा। अरे रोज़ संगम थोड़े ही आयेगा। जितना तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है। अतीन्द्रिय सुख के रस में रहो, रोटी तो घोड़े को घास है, इसका रस नहीं।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

अभी चलने का नहीं उड़ने का समय है

हम कहेंगे अभी हमने आधा घंटा योग किया, तो आधा घंटा योग किया या बीच बीच में युद्ध किया? आधा घंटा आप योग में थे या नहीं, यह आप ही जान सकते हो। तो सारा दिन हम यह चेकिंग करें। चेकिंग करेंगे तो चेंज होंगे। सिर्फ चेकिंग करेंगे तो दिलशिकस्त हो जायेंगे। बाबा चाहता है कि हम अपने स्वमान में रहें। साथ में हम संगठन में रहते हैं, गाँव-गाँव में हमारा घर है, इतने बड़े परिवार के हम हैं। देखो हम झाड़ के चित्र में बीज के साथ बैठे हैं। तो पूर्वज हो गये ना, पूज्य भी हैं, पूर्वज भी हैं। विश्व कल्याणकारी विश्व परिवर्तक हैं। जहान के नूर, बाबा की आँखों के तारे हैं। बाबा समय प्रति समय यह सुधर जाए। इसको कोई ऐसी शिक्षा दें जो यह अपने को ठीक कर लेवे। लेकिन शिक्षा भी अगर क्षमा भाव के बिना होगी तो शिक्षा रोब का रूप ले लेती है। रोब भी क्रोध का ही अंश है। मम्मा हमेशा कहती थीं कि मुझे बाबा ने काम दिया है कि आपको इन अलग-अलग डाल-डालियों को इकट्ठा करके यह चन्दन की डाली बनाना है। हम भी मास्टर प्यार के सागर हैं। तो मास्टर ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर हमारा स्वरूप होना चाहिए। तो शिक्षा भले दो लेकिन क्षमा का स्वरूप हो।

यह हमको चेक करना है कि हम स्वमान में रहते हैं? अपने मन का भी टाइम टेबल बनाओ। किस स्वमान में रहना है, मन्सा से क्या सेवा करना है? कर्मणा क्या करना है, संगठन में स्नेह से कैसे चलना है। एक-दो से कैसे गुण उठाना है। यह सारा मन का कितने स्वमान देते हैं। अमृतवेले हम बाबा से शक्ति लेकर अगर सारे दिन का स्वमान और टाइमटेबल सेट करें कि आज सारा दिन इस स्वमान के अनुभव में रहेंगे। अगर रोज़ एक स्वमान भी याद करें और सारा दिन उसी स्वमान में स्थित रहने का अभ्यास करें, तो बहुत मज़ा आयेगा। संगठन में रहने के लिए दूसरा शब्द है - सबको सम्मान दो। स्वमान में रहो और सम्मान दो।

संगठन में चलना और सफल होना उसके लिए सबको सम्मान दो क्योंकि संगठन में भिन्न-भिन्न संस्कार तो होंगे ही। सभी एक नम्बर तो नहीं होंगे। माला में 108वां नम्बर भी तो है ना! बाबा ने सभी की खातिरी तो बराबर की। फिर भी 108वां नम्बर क्यों बना! यह हरेक का पुरूषार्थ अपना-अपना है। कुछ भी हो संगठन में एक-दो को सम्मान दो और सम्मान लो।

जैसे रास्ते में कोई गिर गया है तो आप उस गिरे हुए व्यक्ति को लात मारेंगे या सहारा देकर उठायेंगे? मर्यादा तो यही है ना कि उसे सहारा दो, खड़ा करो। तो मानो ब्राह्मण परिवार में कोई संस्कार वश गिर गया है तो हमारा काम क्या है? उसको सहारा देना। सहारा क्या देंगे, शुभ भावना, शुभ कामना। भले वो नहीं देवे, मैं तो दूं। संगठन में सम्मान देना है। साथ-साथ परिवार में सबके प्रति यही इच्छा रहती है कि टाइमटेबल रोज़ सुबह अपना बनाना चाहिए। मन का टाइमटेबल बनाने से आपकी चेकिंग बहुत अच्छी हो जायेगी। मन का मालिक बनने के बिना कभी भी ऊंच पद नहीं पा सकते। जो स्व का मालिक नहीं बन सकता, वो विश्व का मालिक कैसे बनेगा! पहले स्वराज्य फिर विश्व राज्य। यह ज्ञान का दर्पण है, इस दर्पण में अपना मुख आपेही देखो।

अचानक के खेल तो शुरु हो गये हैं ना, अति में जाना बाकी है। संसार के समाचार सुनो तो क्या हो रहा है! जो बाबा ने कहा है वो होना शुरू हो गया है। हमारी स्पीड भी वही है या नहीं, अभी तो उड़ने का समय आ गया है। बाबा ने अभी चलने को कैंसिल कर दिया है। उड़ेंगे तब जब बेफिकर बादशाह होंगे। जो करना है सो अब करना है। चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे धन से। अगर बेफिकर बादशाह बनकर रहना है तो कोई हद का संकल्प न हो। बाबा में पूरा फेथ हो। अरे हम अच्छे हैं, अच्छे रहेंगे और अच्छा होगा। इतना निश्चय पक्का होना चाहिए। हमारा साथी कौन है! अति भी हो जाये तो भी साक्षी होकर देखना है। हमारे साथ बाबा है। यह बाबा का निश्चय, हमें निश्चिंत बनायेगा। ये कर लूं, यह बचा लूं। यह आना माना संशय बुद्धि। और संशय बुद्धि विजयन्ती हो नहीं सकता। हमारा बाबा से प्यार है, हम बाबा के प्यार में खोये हुए हैं।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

ज्ञान माना अन्दर डीप जाना

जो न्यारा बनने की प्रैक्टिस नहीं करते उनको माया छोड़ती नहीं। माया उसका पीछा करती है, देखती है यह भगवान का तो बने हैं पर मेरे बिगर रह नहीं सकते। मेरे पास घर है, धन है, पदार्थ है, माया दिखाती है सब। बाबा कहता है मैं दिखाता नहीं हूँ, मेरे पास जो है, इन आँखों से देख नहीं सकते हो और बॉडी कान्सेस से समझ नहीं सकते हो। मेरे पास है तेरे को देने के लिए, उसके लिए सोल कॉन्शियस रहो तो सोल को पता चले। जब तक थोड़ा बॉडी कॉन्शियस है तो बुद्धि ऊपर नहीं जाती है, इधर-उधर जाती है। जब सोल कॉन्शियस है तो ऊपर जाती है। बाबा ऊपर से इतना देता है, जो उसकी भेंट में सब किचड़ा है। बाबा स्वच्छ बना देता है। अन्दर से इतनी स्वच्छता, मैं शुद्ध आत्मा हूँ फिर शान्त, मैं बाप की हूँ तो प्यार पैदा हो जाता है। किसी ने कहा मुझे प्यार का अनुभव नहीं होता है। अरे तुम प्यार करके देखो। वो प्यार कर रहा है, यहाँ-वहाँ से निकालके प्यार करने के लिए आया है। परन्तु झूठा प्यार भी चाहिए, जिस प्यार में दुःख समाया है वो भी नहीं छोड़ना है। और सच्चा प्यार करने वाला बाबा जो सदा सुख देता है, वो भूल जाता है!

ज्ञान माना अन्दर डीप जाना, मैं क्या सोचती हूँ, क्या बोलती हूँ, अपनी करनी को देख, वाणी को देख, विचार को देख। बाबा का आत्माओं से प्यार है। हर आत्मा से प्यार है। कोई भी आत्मा हाँ-हाँ करती है तो पकड़ लेता है। अचानक भी कोई अच्छा अनुभव कराके पकड़ लेता है। फिर वो जो पुराने अनुभव हैं उनको छोड़। कम से कम चार बातें बुद्धि में रखो। बिचारी बुद्धि को भटकने से छुड़ाओ। मन भी उसके साथ है। मन संस्कार हैं तो आत्मा में ही। मन भटकता क्यों है! बुद्धि ठीक काम क्यों नहीं करती है! संस्कार पुराने खत्म क्यों नहीं होते हैं? फिर ज्ञान का सिमरण भी नहीं कर सकते हैं। बाबा ने कहा है हे आत्मा तुम मन को शान्त करके बुद्धि से योग लगा, प्रैक्टिकली बुद्धि लगाई तो संस्कार चेंज हो जाते हैं। संस्कारों में पुराने विकारी कर्म सम्बन्ध भर गये थे, जो अभी समझ में आया है, वह चेंज हो रहा है।

बुद्धि ठीक काम करती है तो दिमाग ठण्डा रहता है। जब मन शान्त होता है, दिल में बड़ी खुशी आती है। पहले मेरा दिल-दिमाग कैसा था, अभी कैसा है। चेंज आता है सुनते-सुनते। अन्दर इंसान को फीलिंग आती है कर्म के अनुसार। अभी अगर मैं चेंज होती हूँ तो फील होता है। अभी तक अलबेलाई है, फील होता है। यह अन्तिम जन्म है, अन्तिम घड़ियाँ हैं, आदि में बाबा के थे, होंगे यह सब स्मृति में है। जिसका स्व पर ही राज्य नहीं है वो स्वदर्शन चक्रधारी नहीं हो सकता। या तो चक्कर में है या किसके साथ टक्कर में है वो स्वदर्शन चक्र क्या घुमायेगा। अपने को चेक करना है किसके चक्कर या टक्कर में तो नहीं हूँ? परन्तु यह चेक करने की फुर्सत ही नहीं है, बाकी सब काम हो रहा है। चक्कर में हैं तो बाबा की याद है ही नहीं, फिर बहाना कुछ हो। अन्दर की आँख खोलकर बाबा को देख, खुद को न देख, पर बाबा को तो देख। बाबा देख रहा है पर बाबा दिखाई नहीं देता है।

मैंने जो परमात्मा के बारे में पढ़ा व सुना... वो इन नज़रों से देखा

तड़प थी मुझे कोई बन्धनों के चंगुल से निकाले

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

वो कौन थे, सृष्टि के आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा, प्रथम पुरुष। जीवन में व्यक्ति को और क्या चाहिए! लेकिन मैंने ऐसे मूर्तियों को देखा, बाबा को देखा, मम्मा को देखा, उन्होंने जो कुछ मेरे साथ किया वो तो अविस्मरणीय है। भूल नहीं सकते हम उसको। वो मूर्तियां मेरी आँख से ओझल कभी भी हो नहीं सकती। लेकिन मैं कोई सिर्फ शरीर रूपी बाहर की जो पार्थिव देह है उस मूर्ति की बात नहीं कर रहा, गुण मूर्ति, ज्ञान मूर्ति, योग मूर्ति वो जो उनकी महानता थी उसकी बात कर रहा हूँ। शुरू से लेकर वो एक लम्बी कहानी है, लम्बी दास्तान है, लेकिन एक थोड़ा-सा हिस्सा उसका आज आपको बताना चाहता हूँ।1952 में जब पहली बार मैं सम्पर्क में आया तो उस कहानी को शुरू से नहीं बता रहा लम्बा करके वो तो कई दिन लग जायेंगे। लोग आते हैं कई मधुबन में ये देखने के लिए, चेक करने के लिए कि ये बहन जी जिसने हमें कोर्स कराया है, वो कहती है भगवान आते हैं ब्रह्मा बाबा के तन में, लेकिन ये बाबा कौन है, कैसे उनके तन में आते हैं, मैं ये देखने के लिए नहीं आया। उनसे मिलने के लिए आया। यहाँ आने से पहले मुझे ऐसा लगता था कि जैसे चूहा किसी चूहेदानी में फँस जाये और निकल न पाये अपने आप। तो इस दुनिया में मैं पता नहीं कैसे फँस गया इस चक्रव्यूह में। अब इससे निकलूं कैसे? तरीका आता नहीं है, फँस गया कि ये क्या है, ये आदमी ये कर रहा है, वो आदमी वो कर रहा है, वो आदमी वो कर रहा है मतलब क्या है? मैं समझ नहीं सका।

बहुत तड़प रहा था, रोता था और कहता था हे प्रभु, हे भगवन आप मुझे निकालो। चूहेदानी से चूहा खुद नहीं निकलता है। उसको कोई निकालने वाला होता है। मुझे कोई निकालो इससे, मैं आपको ढूंढ रहा हूँ, मैं नहीं पहचानता आपको। लेकिन आप तो जानते हो मैं आपको याद कर रहा हूँ। कहा जाता है भगवान दयालु हैं, कृपालु हैं आप दया और कृपा करो। ऐसे मेरे मन में विचार चलते रहते थे। लेकिन जब आया तो उन दिनों में ये जो ईश्वरीय विश्व विद्यालय था ये भरतपुर कोठी में था, अभी वहाँ होटल बना हुआ है। पहले-पहले मैं वहाँ गया। मैंने क्या देखा कि जिसको मैंने कल्प वृक्ष में देखा था ब्रह्मा बाबा को, तो जो भरतपुर कोठी से नीचे सड़क तक एक सड़क आती थी क्योंकि ये कोठी बहुत ऊंची थी। उससे सड़क तक आने का काफी बड़ा रास्ता था। वो रास्ता ठीक नहीं था, उसमें पत्थर ही पत्थर थे। और लूज़ पत्थर थे। कोई व्यक्ति वहाँ पाँव रखे लुढ़क जायेगा। पत्थर के साथ खुद भी लुढ़कता हुआ नीचे पहुंचेगा। तो बाबा ने निक्कर पहनी हुई और बाबा के साथ कुछ भाई निक्कर पहने हुए और उस सड़क को ठीक कर रहे। जिसको

> यहाँ आने से पहले मुझे ऐसा लगता था कि जैसे चूहा किसी चूहेदानी में फँस जाये और निकल न पाये अपने आप। तो इस दुनिया में मैं पता नहीं कैसे फँस गया, इस चक्रव्यूह में। अब इससे निकलूं कैसे?

मैंने कल्प वृक्ष में देखा था बैठे हुए, पालथी मारकर योग लगाते हुए, आज उनको निक्कर में देखा। जो सड़क बना रहे थे। कितनी उमर होगी बाबा की, कम से कम 75 साल तो होगी उस टाइम। ये 1952 की बात है। तो उस समय उस सड़क को बना रहे थे। वो कोमल हाथ, बच्चे आयें उनको कोई तकलीफ न हो। कोई बच्चा गिर न जाये, किसी के पाँव में मोच न आ जाये। कैसा ख्याल करता है। और वो खुद पत्थर उठा-उठा कर ठीक कर रहा है।

मैं खड़ा हो गया, मेरी समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूँ? मैं गाड़ी से आया था, चेहरा मेरा मिट्टी-मिट्टी से भरा हुआ था। सिर भी और चेहरा भी। और सोचा कि जाके नहाऊं-धोऊं फिर आऊं। एक तरफ ये हुआ कि बाबा ये कार्य कर रहा है और मैं चला जाऊं, ये ठीक नहीं है। ये तो हमाकत है। तो क्या करूँ? मैंने सोचा कि मैं भी इसमें लग जाऊं। बाकी बात बाद में रही। बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे जाओ स्नान करो, तैयार हो फिर मिलेंगे, भेज दिया मुझे।

अब पहली-पहली आज्ञा थी बाबा की, मैं उस आज्ञा को टालूं, मैं तो धर्मसंकट में फँस गया। अगर उनकी आज्ञा को टालता हूँ तो भी मैं दोषी हूँ, और अगर मैं उनको कार्य करते हुए देखकर चला जाता हूँ फिर भी दोषी हूँ, क्या करूँ! लेकिन उन्होंने मुखारविंद से कहा कि तुम जाओ तैयार हो। तो मेरा फायदा भी उसी में था। शायद इसीलिए मान गया। तो मैं चला गया। तो ये एक पहली महानता मैंने देखी कि और कई आश्रमों में मैं गया, कई संतों महात्माओं से मिला, कई जगह पर आदेश, उपदेश सुने लेकिन ये इस आयु में भी पत्थर उठा-उठा कर ठीक कर रहा है निक्कर पहन कर। ये है महानता। और गीता में है कि हे अर्जुन, मुझे तीनों लोकों में कुछ नहीं चाहिए। भगवान को क्या चाहिए! कुछ भी नहीं चाहिए,लेकिन फिर भी मैं आता हूँ। और आके कर्म करता हूँ, क्योंकि कर्म करके अगर मैं न दिखाऊं कि ठीक कर्म क्या हैं तो लोग कैसे सीखेंगे? तो मुझे कर्म करके दिखाना पड़ता है कि कर्म कैसे योगयुक्त होकर करने चाहिए। मैंने कहा ये है भगवान के आने का कारण, जो लिखा हुआ है उसमें। आज मैं उस बात को प्रैक्टिकली देख रहा हूँ। मुस्कुराते हुए ऐसा नहीं कोई व्यक्ति सोचे अरे, मैं एक इतना बड़ा जवाहरी था। मेरे पास कारें, बसें, नौकर-चाकर सब थे। महलमाड़ी थी और आज ये हालत है कि मैं खुद पत्थर उठा रहा हूँ। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इस काम को करे। मुझे करने पड़ जाता है। हम लोगों में से बहुतों को ऐसा होता है। जब कोई ऐसा काम करना पड़ जाता है जो हम समझते हैं कि ये हमें नहीं करना चाहिए, कोई और होना चाहिए। हम कहते हैं कि ये क्या मुसीबत है, यहाँ इतने सारे लोग हैं कोई नहीं करता है। मुझे करना पड़ता है। खुशी से बाबा कर रहा है। आगे आपको बताऊंगा बाबा ने मुझे क्या एक्सप्लेनेशन दिया उसका।

- क्रमशः

शनि शिंगणापुर-अहमदनगर(महा.)। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर उन्हें गुलदस्ता भेंट करते हुए पुणे मीरा सोसायटी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. नलिनी बहन, सोनई सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. उषा बहन एवं ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके। महामहिम को ब्र.कु. नलिनी बहन ने पुणे के जगदम्बा भवन रिट्रीट सेंटर द्वारा की जा रही ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी दी व रिट्रीट सेंटर में आने का निमंत्रण दिया।

गाज़ियाबाद-गुलमोहर गार्डन(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आयोजित दीपावली महोत्सव में सांसद एवं केन्द्रीय राज्यमंत्री जनरल डॉ. वी. के. सिंह, भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेन्द्र त्यागी, ब्रह्माकुमारीज़ के रशिया एवं बाल्टिक देशों के सेवाकेन्द्रों की निदेशिका व महिला प्रभाग की अध्यक्षा मुख्य वक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, स्थानीय पार्षद सुमनलता पाल, पूर्व पार्षद संजीव त्यागी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लवली बहन व अन्य गणमान्य लोगों सहित 200 से अधिक लोग शामिल रहे।

दिल्ली-लोधी रोड। गेल(इंडिया) लिमिटेड,भारत सरकार की महारत्न कम्पनी के राष्ट्रीय कार्यालय में सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत 'नैतिकता एवं शासन' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान संदीप गुप्ता,सीएमडी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गिरिजा दीदी व ब्र.कु. पीयूष भाई। साथ हैं संदीप सरकार,मुख्य सतर्कता अधिकारी, दीपक गुप्ता,निदेशक एवं आयुष गुप्ता,निदेशक।

राँची-झारखंड। ओरमांझी गांव में ब्रह्माकुमारीज़ के आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, समाजसेवी शिवनारायण साहू, समाजसेवी अशोक कुमार गुप्ता तथा अन्य।

लालगंज-उ.प्र.। उप जिलाधिकारी सुरेन्द्र नारायण त्रिपाठी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. अनिता बहन तथा अन्य।

राजसमंद-राज.। खामनोर हल्दीघाटी महाराणा प्रताप म्यूज़ियम के डायरेक्टर डॉ. मोहनलाल श्रीमाली जी को मेडिटेशन का महत्त्व बताने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम बहन। साथ हैं ब्र.कु. गौरी बहन तथा अन्य।

रशिया-सेंट पीटर्सबर्ग। दीपावली के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'स्वर्णिम युग की ओर सुनहरे कदम' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी एवं राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी तथा अन्य वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. भाई-बहनों ने विडियो संदेश के माध्यम से सभी को शुभकामनाएं दी। ब्रह्माकुमारीज़ सेंट पीटर्सबर्ग की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य सभी के साथ साझा किया। कार्यक्रम में कुमार गौरव,काउंसिल जनरल ऑफ इंडिया इन सेंट पीटर्सबर्ग एवं विजय कुमार ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में लगभग 250 ब्र.कु. भाई-बहनों ने भाग लिया।

डाकपत्थर-उत्तराखण्ड। 'खुशहाल महिला खुशहाल परिवार' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जिला अध्यक्ष कृष्णा तोमर, मंडल अध्यक्षा दिव्या राणा, सुनीता गुलेरिया, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन व अन्य।

मनाली-हि.प्र.। लाहौल स्पीति में आयोजित मेले के उद्घाटन पश्चात् डी.सी. राहुल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ऋतम्भरा बहन।

गाज़ियाबाद-मकनपुर। थाना इंदरापुरम अभय खंड पुलिस स्टेशन गाज़ियाबाद सब इंस्पेक्टर राजकुमार मान को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. नीलम बहन।

मोतिहारी-बिहार। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आने पर महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का शॉल पहनाकर स्वागत करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के बेतिया सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. अंजना बहन।

माती नबीपुर-कानपुर(उ.प्र.)। स्नेह मिलन कार्यक्रम के दौरान पूर्व मंत्री भगवती प्रसाद सागर, डॉ. जय प्रकाश पांडे, पेट्रोल पंप के मालिक शैलेंद्र सिंह चौहान, समाजसेवी राम सक्सेना आदि गणमान्य लोगों को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता बहन, ब्र.कु. कोमल बहन व ब्र.कु. प्रतिभा बहन।

झारसुगुड़ा-ओडिशा। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी में दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् उपस्थित हैं विधायिका दीपाली दास, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अश्विनी बहन तथा अन्य।

बेतिया-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के संत घाट प्रभु उपवन सेवाकेन्द्र में आने पर तृतीय एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज आर.के. शुक्ला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजना बहन।

आगरा-सिकन्दरा(उ.प्र.)। जेल अधीक्षक ओ.पी. खतिहार को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. मधु बहन तथा अन्य।

मोकामा-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा रेलवे सुरक्षा बल प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निशा बहन, ब्र.कु. गुड़िया बहन, ब्र.कु. नमन भाई, सहायक सुरक्षा आयुक्त पी. करूपस्वामी,रेसुब प्रशिक्षण केंद्र, पवन कुमार वर्मा,सहायक सुरक्षा आयुक्त रेसुब प्रशिक्षण केंद्र मोकामाघाट सहित अधीनस्थ अधिकारीगण व जवान मौजूद रहे।

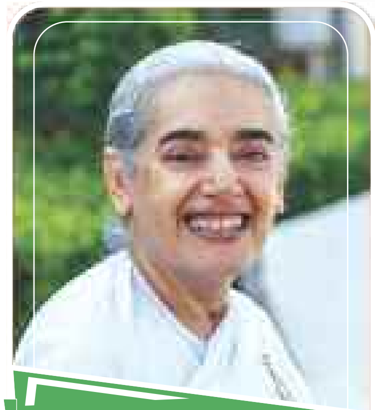

राजयोगिनी ब्र.कु.जयंती दीदी,अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

जब हम ये ध्यान रखेंगे कि अपने समय और संकल्प को वेस्ट न करें, अपने श्वास को अथवा अपने शब्दों को वेस्ट न करें। और हर घड़ी को हम ये समझें कि अभी ये मेरे लिए गिफ्ट है। मैं जो चाहूं अपना भविष्य उस अनुसार बना सकती हूँ।

अपने संकल्पों पर ध्यान दें

आजकल की सिचुएशन अनुसार, या हमारे भारत के अन्दर भी सिचुएशन अनुसार ये संकल्प आता है कि हम अपनी मानसिक स्थिति को कैसे बैलेन्स में रखें, कैसे हमारी स्थिति ऐसी हो कि जिसे हम वेल बिइंग(बेहतर) कहते हैं। क्योंकि न सिर्फ शरीर की सम्भाल करनी है, हाँ वो तो उसको स्वस्थ रखना बहुत ही आवश्यक है। परन्तु साथ ही साथ हमारे मन में भी जो इंटरनल बैलेन्स होना चाहिए, वो हमारे को रखना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि आप देखेंगे कि जो आत्मा की नैचुरल क्वालिटिज़ हैं जिसको हम कहेंगे प्रेम, शांति, सत्यता आदि। आजकल लगता है कि हम इससे बहुत दूर चले गये हैं। जिस कारण से मन के अन्दर बहुत निगेटिविटी आ गई है। जैसे कि हम कहेंगे कि बहुत हिंसक विचार आते हैं। तो उसमें डिप्रेशन, एंग्ज़ाइटी, फियर, इनसिक्योरिटी ये शब्द आजकल हम बहुत आमतौर पर यूज़ कर रहे हैं। मैं समझती बीस-तीस साल पहले इस तरह की कोई भाषा प्रचलित नहीं थी।

ये सब जो बातें चल रही हैं हम कहेंगे कि ये कलियुग की अन्तिम घड़ी की निशानियां हैं। और बात क्या हो गई थी जो अन्दर मन में निगेटिविटी थी वो सभी मिलकर, किसी एक की बात नहीं है हम सभी ज़िम्मेवार हैं। हम सभी ने उस बात को अपने शब्दों द्वारा, मानसिक शक्ति द्वारा, चाहे अपने कर्मों द्वारा, हमने ही इस संसार को ऐसा निगेटिव हालत में बनाया है। अभी क्या है वो निगेटिविटी बाहर आकर हमें भी अटैक कर रही है। अन्दर की निगेटिविटी अभी गई नहीं है, वो तो है ही अभी। परन्तु साथ ही साथ बाहर की जो निगेटिविटी आ रही है उसे भी हम देखते हैं कि आत्मा की शक्ति बहुत ही कम होती जा रही है।

कई लोग पूछते हैं कि निगेटिविटी का इतना जल्दी असर होता है तो पॉज़िटिविटी का असर इतना जल्दी क्यों नहीं होता? निगेटिव हैबिट्स तो हम एक-दो से बहुत जल्दी सीख लेते हैं। पॉज़िटिव हैबिट्स हम नहीं इतना जल्दी सीख पाते। उसका कारण आप देखो कि जब ग्रेविटी होती तो ग्रेविटी नीचे आती और कोई भी चीज़ को ऊपर ले जाने के लिए एक्स्ट्रा पॉवर, एक्स्ट्रा एनर्जी की ज़रूरत होती। तो संसार की अभी वो ही हालत है। निगेटिविटी है तो हम नीचे उतरते आ रहे हैं और कोई हमारी संकल्प की बात नहीं हो रही, ऑटोमेटिक चल रहा है। यदि हमको इससे ऊपर जाना है तो हाँ हमें संकल्प रखना होगा, हमें शक्ति की भी आवश्यकता है। और उस शक्ति के आधार से हम और ऊंचा जा सकेंगे, नहीं तो हम नहीं जा पायेंगे। यदि हम सोचें कि ऑटोमेटिकली परिवर्तन हो जायेगा, नहीं। और ही जो निगेटिविटी है वो आत्मा के ऊपर प्रेशर डालकर हमें नीचे दबा रही है।

परंतु जिस घड़ी हमें आंतरिक जागृति आती है कि मैं कौन हूँ, मैं हूँ ईश्वर की संतान, ईश्वर की संतान कोई ये शरीर के हिसाब से नहीं। शरीर को तो अपने माँ-बाप हैं। परंतु ईश्वर की संतान मैं हूँ आत्मा, अनादि, अविनाशी। साधारण आत्मा नहीं हूँ, मैं हूँ ईश्वर की संतान। वैसे तो हर आत्मा ईश्वर की संतान हैं। परंतु कोई लोग उसको भूले हुए हैं, हम खुद भी भूले हुए थे। परंतु जिस समय इस बात की स्मृति आती और इस स्मृति के आधार से, हमें एक और पहचान होती कि जैसे हमारे मात-पिता बिल्कुल शुद्ध हैं, पवित्र हैं, सदा ही पवित्र हैं, वो तो पतित पावन हैं, तो हम उनकी संतान भी जैसे हमने अपना कुछ भी व्यर्थ नहीं गंवाया है। न मैंने अपना समय वेस्ट किया है, न श्वास, न संकल्प और न पैसा वेस्ट किया है।

जब हम ये ध्यान रखेंगे कि अपने समय और संकल्प को वेस्ट न करें, अपने श्वास को अथवा अपने शब्दों को वेस्ट न करें। और हर घड़ी को हम ये समझें कि अभी ये मेरे लिए गिफ्ट है। मैं जो चाहूं अपना भविष्य उस अनुसार बना सकती हूँ। श्रेष्ठ संकल्प क्या हैं, कईयों को तो ये भी मालूम नहीं होगा। क्योंकि निगेटिव संकल्प को हमने समझा कि ये तो नैचुरल हैं, परंतु नहीं। निगेटिव संकल्प, हमारी जो निगेटिव फीलिंग्स बनाता है उस कारण से आज हम अपने आप को दुःखी करते हैं। संसार ने दुःखी नहीं किया, भगवान ने दुःखी नहीं किया, मैंने अपने संकल्पों से खुद को दुःखी किया। तो पहले तो हम निगेटिव संकल्प को छोड़ें।

फिर नेक्स्ट आता है हमारे जो व्यर्थ संकल्प चलते हैं, आपने देखा होगा कि कोई भी बात होती, है दूसरे की बात परंतु हमारे कान सुन रहे हैं। और फिर मैं उसकी पूछताछ भी करूंगी। ऐसे क्यों हुआ, क्या हुआ, मतलब क्या था उसका। जबकि हमारा काम ही नहीं है। दूसरे की कहानी है वो जाने, वो अपना हिसाब-किताब जाने। न मेरा उसके साथ कुछ लेन-देन है और न उसमें मेरा कुछ फायदा होगा। तो हम जहाँ ज़रूरत है अपनी एनर्जी को यूज़ करें। और जहाँ मेरी एनर्जी की ज़रूरत ही नहीं है मैं क्यों वहाँ पर यूज़ करूं! तो जो हमारे व्यर्थ संकल्प चलते हैं उससे हमारी बहुत एनर्जी व्यर्थ जाती है। जब माइंड का कन्ट्रोल होता बुद्धि इतनी शक्तिशाली है जो घोड़े को पकड़कर रखा है, लगाम को हाथ में अच्छी तरह से रखा है। तो हम अपने व्यर्थ संकल्पों को फिनिश कर सकेंगे।

नेक्स्ट आते हैं साधारण संकल्प। खाना-पीना, जाना, करना सब बातें, संसार की बातें तो सदा ही चलती रहेंगी और यदि हम अपने संकल्पों को इस तरह चलायेंगे- साधारण संकल्प मिन्स, साधारण जीवन, साधारण व्यक्ति। मुझे ऐसे ही चलना है ठीक है परंतु मुझे इससे और ऊंचा जाना है तो पहले तो मैं ये सोचूं कि मैं शुद्ध संकल्प करूं, खुद के बारे में, परमात्मा के बारे में, सेवा के बारे में, शुद्ध संकल्प में शक्ति होती। और शुद्ध संकल्प करते हमें ये भी पता चलता है कि श्रेष्ठ संकल्प बहुत ऊंचे संकल्प जो अनेकों के भले के लिए होते ये अनुभव होगा।

कपूरथला-पंजाब। पुलिस लाइन में डीएसपी अमरीक सिंह एवं अन्य पुलिस अधिकारियों व स्टाफ को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

दिल्ली-विनोद नगर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय ईस्ट विनोद नगर दिल्ली स्कूल में नशा मुक्ति कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ममता बहन, ब्र.कु. विनीता बहन, स्कूल के प्रिंसिपल अजय कुमार, शिक्षकगण व 9वीं से 12वीं तक के लगभग हज़ार विद्यार्थीगण।

तोशाम-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में महा अष्टमी के पावन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में आध्यात्मिकता का महत्त्व बताते हुए उप-जिला अधिकारी मनोज दलाल। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू बहन।

बैरिया-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में ए.डी.आर.एम. निर्भय सिंह से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् उन्हें ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन व ब्र.कु. समता बहन। साथ हैं ब्र.कु. अजय भाई व अन्य।

शिव अवतरण

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

महाशिवरात्रि विशेषांक ओमशान्ति मीडिया माउण्ट आबू

धरा पर चल रहा परमात्मा शिव द्वारा महापरिवर्तन का कार्य

नवीन मानवीय सृष्टि की आधारशिला...महाशिवरात्रि

कहते हैं, एक बीज बिना आवाज किये उगता है
लेकिन एक पेड़ भारी शोर के साथ गिरता है।
विनाश में शोर है लेकिन सृजन शांत है।

आज किसी भी क्षेत्र में जाइये, तो शोर ही शोर है। दुःख, अशांति, घृणा, नफरत, उदासीनता हर जगह व्यापक है। चारों ओर विनाश के दृश्य दिखाई दे रहे हैं। ऐसे में शिवरात्रि के महा त्योहार को समझना बहुत ही ज़रूरी हो जाता है। रात्रि माना अंधकार और शिव माना प्रकाश, कल्याणकारी, मंगलकारी। इसको समझें तो ये पता चल रहा है कि सृष्टि के कालचक्र में हम 5000 साल की लम्बी यात्रा करके अब हम इसके अंतिम के भी अंतिम पायदान पर खड़े हैं। किसी को समझ में नहीं आता, मनुष्य की सोच से परे की चीज़ अभी घटित हो रही है, अचानक हो रही है, जिसके कारण दुःख, अशांति अति में है। शास्त्रों में देखें तो कहीं ये वर्णन भी आता कि जब-जब इस दुनिया में पापाचार, अत्याचार सभी सीमायें लांघ चुका होगा तब परमात्मा का दिव्य अवतरण इस धरा दिव्य सृष्टि बनाने के लिए होगा। आप अगर थोड़ा साक्षी भाव से देखें और शांत मन से सोचें तो क्या ऐसा नहीं लग रहा कि वर्तमान समय में नये सृष्टि के सृजन का संधिकाल है! इसी वक्त में परमात्मा शिव शांति से नव विश्व के सृजन का कार्य कर रहे हैं। इस दुनिया के महापरिवर्तन का ये काल चल रहा है। जहाँ विश्व में चारों ओर अज्ञान अंधकार है, हंगामे हैं, त्राहि-त्राहि है, करुण पुकार है, वहीं दूसरी ओर परमात्मा द्वारा अरावली श्रृंखला के सुरम्य वातावरण में शांति के साथ शांति की दुनिया की आधारशिला रखी जा रही है। वैसे कहते भी हैं, चक्र के चार भाग हैं, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। कलियुग के बाद फिर पुनः सतयुग आयेगा। ऐसे में सतयुग में जाने के लिए हमें हमारे मन, बुद्धि, वृत्ति और कृति को श्रेष्ठ बनाने के लिए परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर हमें परमशिक्षक के रूप में सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। और हमें नई दुनिया में जाने के योग्य बना रहे हैं।

जैसे किसी विशेष क्षेत्र में निपुण होने के लिए उसी विषय की पढ़ाई पढ़नी होती है, तभी योग्य बन पाते हैं, उसी तरह सतयुग में जाने के लिए भी वहां की प्रकृति अनुसार हमें लायक बनना होगा। जिसकी ही शिक्षा सतयुग निर्माता, स्वयं परमशिक्षक परमात्मा शिव हमें दे रहे हैं। हमें एक श्रेष्ठ विद्यार्थी बनकर उस शिक्षा को आत्मसात कर सतयुग में जाने के योग्य खुद को बनाना है।

परमात्मा द्वारा सृष्टि के महापरिवर्तन में हम सब आत्माओं की भी विशेष भूमिका है। इस भगीरथ कार्य में हमें भी सहयोग करना है। तभी हमारी मनइच्छित पावन दुनिया इस धरा पर पुनः आयेगी। अब नहीं तो कब नहीं। बस, ये वक्त जा रहा है...

शिवरात्रि आई, अपने साथ ढ़ेरों खुशियां लाई

न जाने हमने खुशियां प्राप्त करने के लिए जीवन में कितने हथकंडे अपनाएं हैं कि कहीं खुशी की झलक हमारे जीवन में मिल जाए। हम तो दर-दर भटकते रहे, तेरे-मेरे में, वस्तु-वैभव, पदार्थों में खुशी ढूंढने की कोशिश की। लेकिन जितना ही ढूंढा उतने ही दूर होते गए। लेकिन आज इस शिव जयन्ती के अवसर पर आपको खुशियों की विधि बताते हुए हमें अति हर्ष हो रहा है कि स्वयं खुशियों का दाता, वो प्राणेश्वर, परमेश्वर, परमपिता हमारी खाली झोली को खुशियों से भरने की राह दिखा रहे हैं। अब परमात्मा शिव ने स्वयं आकर ये बताया है कि हे मेरे लाडले बच्चों! खुशियां तो आपके पास ही हैं, लेकिन उसको कैसे अर्जित करना है, ये मैं आपको बताता हूँ। आओ, इस शिवरात्रि के शुभ अवसर पर अज्ञान अंधकार के बादल को हटाएं और अपने आप से भी प्यार करें, अपनी शक्ति यों को पहचानें और मुझ शक्ति यों के सागर के साथ नाता जोड़ खुशियों के झूले में झूलें। यही तो सच्चे अर्थ में शिवरात्रि मनाना है।

तो आओ बढ़ायें एक कदम शिव पिता की ओर।
तब दिखेगी जीवन में एक स्वर्णिम सुनहरी भोर।।

शुभकामना संदेश

परमात्म अवतरण का संदेश जन-जन तक पहुंचायें

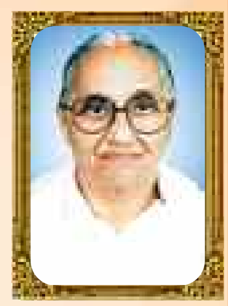

हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम उनसे असीम सुख ले रहे हैं। मैं चाहती हूँ सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियां हम सबकी नज़रों के सामने आने ही वाली हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। उस परमात्मा शिव के अवतरण का यह संदेश जन-जन तक पहुंच जाये और हर आत्मा सुख, शांति, पवित्रता का वर्सा ले-ले, यही महा शिवजयंती के अवसर पर हमारी शुभ भावना है। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवजयंती पर्व की कोटि-कोटि व हार्दिक शुभकामनाएं। - **राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी,मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़**

शिवरात्रि परमात्म अवतरण की यादगार

परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियां आती हैं, हमारा आत्मबल बढ़ता है क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता हैं। सत्-चित-आनंद स्वरूप हैं लेकिन आज हम अपने स्वरूप को भूल गये हैं। परमात्मा शिव जब धरा पर आते हैं, जिसकी यादगार हम महाशिवरात्रि के रूप में मनाते आये, ब्रह्माकुमारी बहनें इसका आध्यात्मिक रहस्य सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्दी ही इस धरा पर स्वर्णिम युग आयेगा। परमपिता परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं उसके सानिध्य में आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव का ध्यान लगाती हूँ। आप भी इस महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को समझ अपने जीवन में सुख, शांति लायें, ये मेरी शुभकामना है। **-द्रौपदी मुर्मू,राष्ट्रपति,भारत।**

समय है ज्ञान और योग के इन्नोवेशन का

अमृत काल का ये समय हमारे ज्ञान योग और इन्नोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। मैं जानता हूँ ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ परिवार का अभिनंदन करता हूँ। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसे आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। शिवरात्रि के महापर्व पर मैं सभी को कोटि-कोटि बधाई देता हूँ। नरेन्द्र मोदी,प्रधानमंत्री,भारत।

सत् धर्म की स्थापना करने 'मैं' इस धरा पर आता हूँ...

शिव पुराण, रामायण, महाभारत, यजुर्वेद, मनुस्मृति व श्रीमद्भगवद्गीता से लेकर कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात की गई है। किसी भी धर्म ग्रंथ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण व परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वो परकाया प्रवेश कर नई सृष्टि की रचना का दिव्य कर्तव्य कराते हैं। यहां तक कि शिव पुराण में तो स्पष्ट लिखा है कि मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।

काल चक्र की अंतिम वेला, घोर कलियुग के अंतिम चरण में जब अधर्म, पापकर्म, भ्रष्टाचार अपनी सारी सीमाएं लांघ चुके। विज्ञान ने विनाश की पूरी तैयारी कर ली। प्रकृति अपनी पूर्वावस्था पाने को लालायित। सम्बन्ध तार-तार हो रहे। तनाव-अवसाद ने हर मानव के मन-मस्तिष्क में अपना डेरा डाल लिया। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट मनुष्य सच को न सुनना, न समझना और न उसपर चलना चाह रहा। बारूद पर लेटी धरती नव जीवन पाने की चाह में अंतिम श्वास की सिसकियां ले रही। इस दयनीय अवस्था से बाहर निकालना संसार के किसी भी बड़े से बड़े विद्वान, ज्ञानी, महापुरुष, साधक के वश की बात नहीं। ऐसे समय पर सिर्फ और सिर्फ एक सहारा परमात्मा ही सबको नज़र आ रहा, जो इन विनाशकारी, दुःखदायी अवस्था से हर मानव और प्रकृति को निकाल एक सुखदायी, आनंदमयी और सतोप्रधान अवस्था प्रदान कर सकते हैं। ये महापरिवर्तन केवल ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती है। इसलिए आज स्वयं सृष्टि के रचयिता निराकार शिव परमात्मा की इस धरा पर अत्यंत आवश्यकता है।

सभी शास्त्र और पुराणों ने भी माना परमात्मा का अवतरण

गीता में भगवान के महावाक्य हैं, मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद, तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूँ। परमात्मा कहते हैं कि मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में सत् धर्म की स्थापना करने और प्रायः लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूँ। वत्स, तू अपने मन को मेरे में लगा। तो मैं तुझे सब पापों से मुक्त करूंगा। मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा। अब सवाल उठता है कि यह लुप्त हुआ ज्ञान क्या है? यदि वर्तमान में दिया जा रहा ज्ञान सही है तो फिर परमात्मा को इस धरा पर क्यों आना पड़ता है? आखिर इस सृष्टि में सत्य ज्ञान क्यों और कैसे लुप्त हो जाता है? सत्य ज्ञान से मनुष्य दूर क्यों हो जाता है? इन सवालों के जवाब स्वयं परमात्मा परमशिक्षक बन हमें देते हैं।

परमात्मा कहते, वत्स! तू मन को मुझमें लगा। यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू अपने मन को मुझमें लगा! जैसे एक दिन में कोई विशाल पेड़ तैयार नहीं हो जाता, उसी तरह आत्मा पर जन्मों से चढ़ी विकारों, पापों की परत एक दिन में दूर नहीं होती है। इसके लिए हमें नियमित, निरंतर, परमात्मा का ध्यान करना पड़ता है। कर्म में ही योग को शामिल कर कर्मयोगी, राजयोगी जीवनशैली को अपनाना होता है। जब हम मन को एकाग्र कर खुद को आत्मा समझकर निरंतर परमात्मा को याद करते हैं तो उनकी शक्तियों से आत्मा पर लगी विकारों, पाप कर्मों की मैल धुल जाती है। धीरे-धीरे एक समय बाद आत्मा परमात्मा की शक्ति से सम्पूर्ण पावन, पवित्र और सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त कर लेती है। और मनुष्य की इस अवस्था को ही हम देवी-देवता कहते हैं।

रामायण में लिखा है कि - बिनु पद चलइ, सुनइ बिनु काना। कर बिनु कर्म करइ विधि नाना।। आनन रहित सकल रस भोगि। बिनु बाणि वक्ता बड़ जोगि(शिव के लिए)।।

वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के कर्म करता है, फिर भी हज़ारों भुजाओं वाला है। बिना मुंह के सारे(छाहों) रसों का आनंद लेता है। और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

- मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अण्ड प्रकट हुआ, जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशवान था।
- महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

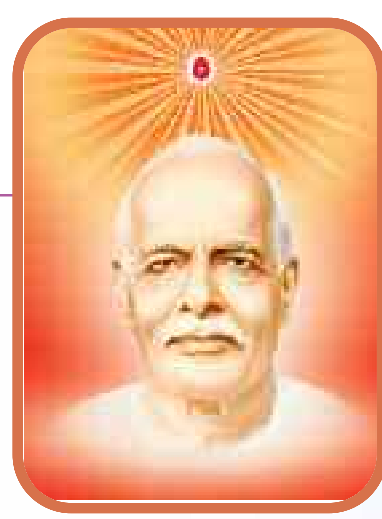

शिव पुराण में कोटि रूद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि 'मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।' समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नव युग की आधारशिला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रूद्र हुआ। यहां ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा को ज्ञान का सागर कहा जाता है। परमात्मा ज्ञान के सागर हैं तो हम आत्मायें उनकी संतान ज्ञान स्वरूप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। इसलिए दुनिया में ज्ञानी, महापुरुषों की महिमा और गायन है। जब परमात्मा ब्रह्मा जी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं।

कहाँ है परमपिता परमात्मा शिव का निवास स्थान

आज लोगों ने अज्ञानता के कारण मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मान लिया है। जो मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा के बारे में जानने के बाद यह स्पष्ट रूप से हमें जानने की आवश्यकता है कि परमात्मा और हम सभी मनुष्य आत्मायें कहाँ से इस सृष्टि पर आती हैं? इस सृष्टि चक्र में तीन लोक होते हैं। स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन और मूल वतन अर्थात् परमधाम।

स्थूल लोक : आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इन पाँचों तत्वों से मिलकर बना है स्थूल लोक, मनुष्य सृष्टि, जिसमें हम निवास करते हैं। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल भोगता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अतः सृष्टि को विराट नाटकशाला, लीलाधाम भी कहा जाता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि चक्र आकाश तत्व में अंशमात्र में है। स्थापना, विनाश और पालना परमात्मा के दिव्य कर्तव्य भी इसी लोक से सम्बंधित हैं। सृष्टि की हर पाँच हज़ार वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्मायें नियत समय पर अपना-अपना पार्ट बजाने इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं।

सूक्ष्म लोक : सूर्य, चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म(अव्यक्त) लोक है। उस लोक में फैले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णुपुरी और उसके भी पार महादेव शंकरपुरी है। इन तीनों देवताओं के पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र व आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह नहीं हैं। दिव्य चक्षुओं द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। इसमें मृत्यु, दुःख अथवा विकारों का नाम-निशान नहीं होता। इन तीनों देवताओं द्वारा ही परमात्मा सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालना कराते हैं।

परमधाम : सूक्ष्म लोक से ऊपर एक असीमित रूप से फैले हुए तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है, इसे अखंड ज्योति, ब्रह्मतत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिंदु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्मायें अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्म लोक, परमधाम, शांति धाम, निर्वाण धाम, मोक्ष धाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। अतः वहां न सुख है, न दुःख है। बल्कि एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म बंधन वाला शरीर नहीं होता है।

परमात्मा से आप भी मिल सकते हैं...

इस संसार का एक भी प्राणी सत्यता के साथ पूरे निश्चय से ये नहीं कह सकता कि मैंने परमात्मा को देखा है, उनसे मिलन मनाया है, उनकी पालना ली है। लेकिन हम ये पूरे निश्चय, दृढ़ विश्वास और साक्ष्य के साथ कह सकते हैं कि हमने उसे देखा भी है, उनकी पालना भी ली है, और उनके गोद के अतीन्द्रिय सुख के झूले में भी हम झूले। हम और हमारे जैसी लाखों आत्मायें इस सुख से भरपूर मिलन का आनंद ले रही हैं... ये दृश्य सिर्फ अरावली श्रृंखला में स्थित आबू पर्वत पर ही देखने को मिलता है। अगर आप भी सच में उनसे मिलना चाहते हैं! तो बस एक कदम आगे बढ़ायें। वहीं आपकी उनसे मुलाकात होगी।

ये आपके लिए आश्चर्य तो होगा ही, लेकिन हमने ये देखा अपनी नज़रों से। अब वे कैसे मना रहे थे मिलन, ये तो एक अनोखी ही विधि है। क्योंकि परमात्मा निराकार है और निराकार परमात्मा से मिलन मनाना, अर्थात् उन जैसा हमें भी निराकार होना पड़े। क्योंकि समानता से ही मिलन होता है। जैसे कहा जाता है, 'जैसा बाप वैसा बेटा', तो हमारे पिता परमात्मा शिव का रूप ज्योतिर्बिन्दु निराकार, तो हमारा भी रूप ज्योतिस्वरूप ही होगा ना! ज्योत से ज्योत जलेगी ना! और अज्ञान अंधियारा मिटेगा।

जब किसी का बच्चा विदेश में पढ़ता है, और उसके पिता को जब अपने बच्चे से मिलना होता है तो वो किस चीज़ का सहारा लेता है, वायरलेस कनेक्शन या 'बेतार का तार'। इसका मतलब है कि किसी से भी अगर हमको स्थूल में भी बात करनी हो तो उसके लिए भी हमें थोड़ा सूक्ष्म बनना पड़ता है। वैसे ही यदि परमात्मा से मिलन मनाना है या सम्बन्ध जोड़ना है, तो हमें भी अपने मन के तार को उसके साथ जोड़ना होगा।

वास्तव में देखा जाए तो मनुष्य का सीधा तारतम्य 'मन' से है। मन ही तो मिलन मनायेगा ना! ऐसा ही सुंदर मिलन हमने देखा भी, मनाया भी और मनाते हुए अनेक जिज्ञासुओं को देखा। इस मिलन में और कुछ नहीं, सिर्फ मन और दिल से ही मिलन मनाया जाता है। जब मन को वास्तव में जो चाहिए था वो मिल जाता, तब वो सुकून महसूस करता है और खुशियों में झूम उठता है। तब गीत गाने लगता, 'पाना था सो पा लिया, अब ना रहा कुछ बाकी...' ये हमने अपनी आँखों से देखा व सुकून पाया। ये ऐसा सुंदर अलौकिक मिलन इस धरा पर हो रहा है। तो आपका मन उनके मिलन के लिए लालायित नहीं है! आखिर वो आपका भी तो पिता है ना! जिसे पाने के लिए ही तो आप उसे पूजते रहे, पुकारते रहे, पहाड़ों-कन्दराओं में ढूंढते रहे।

तो आइये, आपको हम बताते हैं उनकी मिलन भूमि के बारे में। ऐसे सुंदर मिलन की धरनी आबू अरावली पर्वत है, जहाँ उस अलौकिक मिलन की महफिल लगती रहती है। आप भी इस महफिल में शामिल होना चाहेंगे ना! तो अब देर किस बात की! आयें और इस महफिल में शामिल हो जायें और अपने उस प्राण प्राणेश्वर के सच्चे आशिक बनकर उसको अपने दिल में बसा लें और उनसे मिलन का आनंद लें।

वो ही है परमात्मा...ये पहचान कैसे हो!

आखिर परमात्मा कौन हो सकता है? क्या अलग-अलग धर्म, वर्ग और पंथ का अलग-अलग परमात्मा है या इस सृष्टि और सृष्टि में हम सभी मनुष्यात्माओं को रचने वाला परमात्मा एक है? इसपर विचार करें तो देखने में आता है कि एक तरफ तो हम कहते हैं कि गॉड इज़ वन, सबका मालिक एक। वहीं दूसरी ओर हम कह देते कि मुझमें भी भगवान, तुझमें भी भगवान। फिर कोई कहते ये मेरा भगवान, वो तुम्हारा भगवान। फिर और कई तो प्रकृति को भी भगवान मानते हैं। सृष्टि में इन विभिन्न तरह के भाव लिए विभिन्न वर्ग हैं। यहां असमंजस की स्थिति पैदा हो जाती है कि आखिर वो है कौन? परमात्मा को कौन-सी ऐसी कसौटी पर करें कि उसे यथार्थ रूप से पहचाना जा सके? ताकि अगर कल ही भगवान हमारे सामने आ जायें तो हम उसे पहचान सकें। तो इसके लिए हैं ये मुख्य पाँच कसौटियाँ जिससे उसे पहचाना जा सके...

1. भगवान वो हो सकता है जो सर्वमान्य हो

ग्लोबली एक्सेप्टेड हो। जिसको सभी धर्म वाले परमात्मा स्वीकार करें, जैसे हम कहते हैं कि राम भगवान है, लेकिन अन्य धर्म वाले तो कहते हैं कि ये आपके भगवान हैं। उसी श्रृंखला में यदि हमें ईशा मसीह कहें, तो हम कहेंगे कि ये तो क्रिश्चन धर्म के हैं। इसी तरह सभी ने अपने-अपने भगवान बना रखे हैं, तो ये तो सर्वमान्य नहीं हुआ ना! भगवान तो वो है ना जिसे सभी मानें। कोई भी स्पष्ट नहीं है, तो उसे भगवान कैसे मानें!

2. परमात्मा वो है, जो सर्वोच्च हो

जिसके ऊपर कोई ना हो। उसका न कोई माता-पिता हो, न बंधु-सखा, न शिक्षक, उसे कहेंगे परमात्मा। लेकिन जितने भी धर्म पिता हैं या दिव्य आत्मा हैं, उनके माता-पिता, बंधु-सखा सब हैं, तो ये भगवान कैसे हो सकते हैं!

3. परमात्मा उसे कहा जायेगा जो सर्वोपरी हो

अर्थात् जिसका जन्म-मरण के चक्र से कोई नाता न हो। परमात्मा को अजन्मा कहते हैं। अजन्मा के साथ-साथ ये भी कहा जाता है कि उसे काल कभी नहीं खा सकता। लेकिन

सभी को यहां शरीर छोड़ते और जन्म लेते दिखाया जाता है। तो ये भी उस कसौटी के साथ खरा नहीं उतरा।

4. परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो

जिसको तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान हो। जो त्रिकालदर्शी हो। लेकिन आज तक जो सुना व पढ़ा है कि विष्णु जी के पास समस्या का समाधान न होने पर शंकर जी के पास भेजते और वहाँ भी समाधान न हो तो ब्रह्मा जी के पास भेजते हैं।

5. परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों में अनंत हो

जिसकी महिमा के लिए कहते हैं कि धरती को कागज़ बनाओ, समुंदर को स्याही बनाओ और जंगल को कलम बनाओ, तो भी उसकी महिमा लिखी न जा सके। लेकिन यहां परमात्मा के गुणों को तो छोड़ो, अवगुणों की भी चर्चा है। इसलिए जो गुणों में अनंत होगा, उसमें अवगुण नहीं हो सकता।

तो ये है परमात्मा को परखने की पाँच कसौटी, जिसपर हमें अपनी मान्यताओं को कस कर देखना है कि क्या वे सत्य हैं या असत्य?

जल्दी ही अपने सत्य पिता को पहचानो। कहीं उसे पहचानने में देर न हो जाये...

परमात्म ज्योति स्वरूप को सबने स्वीकारा

विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। सभी मानते हैं, परमात्मा एक है। सर्वशक्तिवान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिंदु स्वरूप है। इस सम्बन्ध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद है, स्वरूप के सम्बन्ध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है। क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। शिवलिंग का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों(जो कि प्राकृतिक रूप से प्रकाशवान होते हैं) के बनाये जाते थे। क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिंदु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार से मान्यता दी गई है।

श्री राम ने भी शिव की पूजा की

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्री राम ने भी की है। जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। परमात्मा शिव श्रीराम के भी आराध्य है। यदि श्रीराम भगवान होते तो इन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई! वे जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्म शिव की तपस्या करके ही प्राप्त की थी।

शंकर जी भी लगाते हैं शिव का ध्यान

हम शंकर जी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में ही देखते हैं। इससे स्पष्ट है कि उनके भी कोई आराध्य या देव हैं जिनका ये स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव शंकर के भी रचयिता हैं, वे शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्ध नेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से करवाई पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिवान निराकार शिव की पूजा अर्चना की। और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई, उसके पश्चात् युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वे सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

निराकार, निर्वैर, सतनाम

सिक्ख धर्म में गुरुनानक देव जी ने कहा है, एक ओंकार निराकार। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम है, जिसको काल कभी नहीं खा सकता' यह सब महिमा गुरबाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा, उन्होंने निराकार, निर्वैर, सतनाम कहा। गुरु नानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

नूर-ए-इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर ए इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम व ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना तेज। अतः सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में इस परम सत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। इसके अलावा विश्व भर में सभी वेद-शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथों आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योति स्वरूप की व्याख्या की है। वही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता, परमपिता परमेश्वर परमात्मा शिव हैं।

गॉड इज़ लाइट

जीसस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है।

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिवान परमात्मा शिव की महिमा गाई है। जहाँ श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले ज्ञानेश्वर के रूप में तो श्रीराम ने भी रावण से युद्ध के पहले रामेश्वरम में शिवलिंग की पूजा की। गुरबाणी में कहा है, एक ओंकार निराकार, तो मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा। जिसस ने कहा गॉड इज़ लाइट। इसी तरह निराकार ज्योतिर्लिंगम परमात्मा का यादगार स्मरण सभी धर्मों में किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार, सृजनहार, पालनहार वही परमसत्ता परमात्मा ही हैं।

परमात्मा शिव को प्रसन्न करने के लिए लें पाँच संकल्प

परमपिता परमात्मा शिव जिन्हें भोलेनाथ भी कहते हैं, वे इतने भोले हैं कि वे हमसे कोई वस्तु, वैभव नहीं लेते अपितु हममें निहित कड़वाहट, बुराइयों, कमियों को हमसे लेकर हमें सुख, शांति, वैभव का जीवन प्रदान करते हैं। इसी के यादगार स्वरूप हर मनुष्य आत्मा महाशिवरात्रि पर शिवलिंग पर कड़वे फल-फूल आदि अर्पित करते हैं। लेकिन परमात्मा को ऐसी कोई भी वस्तु नहीं चाहिए। उन्हें तो केवल हमारा सच्चा और साफ मन चाहिए। तो इस महाशिवरात्रि पर उन्हें भले आप कुछ अर्पित करें या ना करें किंतु उन्हें साक्षी मानकर निम्नलिखित पाँच संकल्प खुद से अवश्य करें और इसे सदा के लिए आत्मसात करें। इससे आप तो योग्य बनेंगे ही और परमात्मा शिव भी प्रसन्न होंगे और आपको हर मनइच्छित वर प्रदान करेंगे।

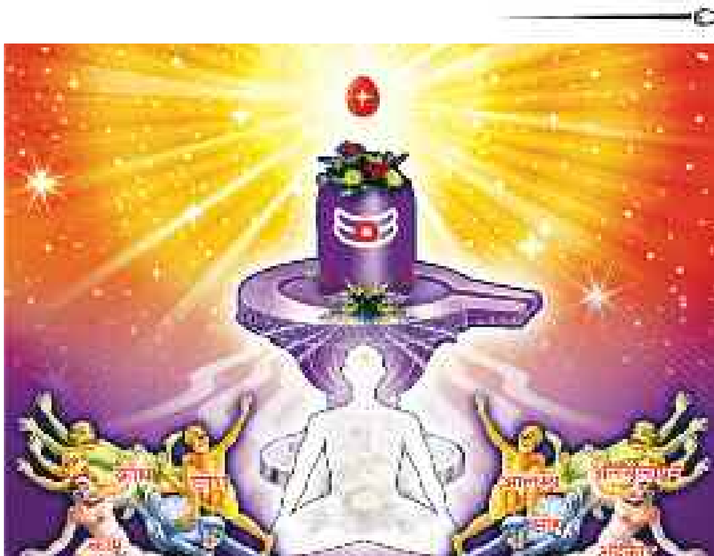

1. मन को साफ करो, औरों को माफ करो

कोई हमारी निंदा या विरोध करके अपने ऊपर पाप का बोझा या कर्मों का ऋण चढ़ाता, तो हमें उसे माफ कर देना है। उससे घृणा नहीं करनी, न ही उससे अपने मन को मैला करना है।

2. माया की गुलामी को सदा के लिए सलामी

हम मनुष्य आत्मायें माया की, अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के बंधक या गुलाम बने हुए हैं। इन्हीं विकारों के ऋण से छुटकारे के लिए इस त्योहार पर हम इससे मुक्ति पाने का संकल्प लें।

3. रूठना नहीं, रूठाना नहीं

वर्तमान समय हमारी आपात स्थिति है। इसलिए हमें न स्वयं दुःख पाना है, न दूसरों को दुःखी करना है, न रूठना है, न किसी को अपने से या शिव बाबा से रूठाने वाली बात कहनी है। सभी से दूध और चीनी की तरह मिलकर रहना है।

4. मायूसी, उदासी से मुख मोड़ो प्रभु से नाता जोड़ो

बेबसी को छोड़ा जाये और इसके लिए आत्मविश्वास किया जाये। क्योंकि आत्मविश्वास से ही भावना सुदृढ़ होगी। माया से पूर्णतः मुख मोड़कर प्रभु से नाता जोड़ा जाये। ये नाता अपनाने से ही सम्पूर्णता की प्राप्ति होगी तथा विकारों से मुक्त होंगे।

5. मन की सच्चाई, बुद्धि की सफाई

जिस प्रकार हम बाहरी सफाई पर ध्यान देते हैं, ऐसे ही इस शिवरात्रि पर हमें सच्चाई के साथ मन-बुद्धि की सफाई कर उसे स्वच्छ बनाना है।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

स्थानीय सेवाकेन्द्र

गुमला-झारखंड। नवरात्रि पर आयोजित चैतन्य नव दुर्गा झाँकी में उपस्थित हैं सांसद सुदर्शन भगत, पूर्व विधायक कमलेश उरांव, ब्र.कु. शांति बहन तथा अन्य।

अयोध्या-उ.प्र.। डॉ. अमित कुमार गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी को चैतन्य देवियों की झाँकी के अवलोकन के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा बहन।

कुरुक्षेत्र-दर्रा खेड़ा(हरियाणा)। नवयुग सीनियर सेकेंडरी स्कूल वशिष्ठ कॉलोनी में विद्यार्थियों में सद्‌गुण विकसित करने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में कक्षा तीसरी से12वीं तक के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मीनाक्षी बहन। इस अवसर पर स्कूल के डायरेक्टर बी.डी. गाबा, वाइस प्रिंसिपल रिद्धिमा बतरा, ब्र.कु. सिमरन, सुनीता मित्तल, कोऑर्डिनेटर रितु, मुख्य अध्यापिका प्रीति मिश्रा व सभी स्कूल स्टाफ सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

मुंगेर-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के शुभारंभ कार्यक्रम में संजय कुमार सिंह,कमिश्नर, नवीन कुमार,डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, किरण निधि,मंडल कारा अधीक्षक, विपिन कुमार,एक्साइज़ सुपरिंटेंडेंट, चंदन कुमार,ऑफिस सुपरिंटेंडेंट ऑफ कलेक्ट्रेट, ब्र.कु. राजीव भाई, राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता बहन,भागलपुर, राजयोगिनी ब्र.कु. वनीता बहन,सीतामढ़ी, ब्र.कु. सुधाकर भाई,दरभंगा व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित लगभग 150 स्थानीय लोग शामिल रहे।

लुधियाना-पंजाब। शहीद करतार सिंह सराभा के शहीदी दिवस के अवसर पर लुधियाना के पंजाब कृषि विश्व विद्यालय में आयोजित विशाल साइकिल रैली से जुड़कर ब्रह्माकुमारीज़ के सौ से भी अधिक सदस्यों ने जन-जन को व्यसनमुक्त का संदेश दिया और शपथ दिलाई।

भोरे-गोपालगंज(बिहार)। दुर्गा पूजा के शुभ अवसर पर चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में कटेया थानाध्यक्ष छोटन कुमार एवं अन्य पुलिस पदाधिकारियों के साथ ब्र.कु. अंगूर बहन, ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन व ब्र.कु. रूबी बहन।

तिल तेल के भी फायदे जबरदस्त...

तिल को उपयोग करने के कई तरीके हैं, जिनमें तिल के तेल का इस्तेमाल भी शामिल है। यह कई औषधीय गुणों से भरपूर होता है। इस कारण इसे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी कहा जाता है। तिल के तेल को त्वचा और बालों में लगाने के साथ-साथ भोजन बनाने में भी उपयोग किया जाता है। यह तिल का तेल कुछ शारीरिक समस्याओं के लक्षणों को कम करने में भी मदद कर सकता है। तिल का तेल और किस तरह से काम करता है, जानने के लिए आगे बढ़ते हैं...

तिल तेल के फायदे

स्वास्थ्य के लिए तिल का तेल खाने के फायदे कई हैं। इन सभी फायदों के बारे में हम लेख में आगे विस्तार से जानेंगे। बस तिली तेल के फायदे के बारे में पढ़ने से पहले यह जान लें कि यह तेल किसी बीमारी का इलाज नहीं है, बल्कि एक अच्छा तेल है, जो व्यक्ति को स्वस्थ रखने में मदद कर सकता है।

1. विटामिन ई का अच्छा स्रोत

एक रिसर्च में बताया गया है कि तिल के तेल में टोकोफेरोल होता है। यह विटामिन ई का ही एक रूप है। इस वजह से तिल के तेल को विटामिन ई का अच्छा स्रोत माना जाता है। इसके अलावा, टोकोफेरोल यानी विटामिन ई एंटीऑक्सीडेंट्स की तरह कार्य करता है, जो शरीर को फ्री रेडिकल्स से बचाकर कई बीमारियों के जोखिम को कम कर सकता है। बताया जाता है कि फ्री रेडिकल्स की वजह से शरीर में कैंसर सेल्स के बढ़ने व हृदय रोग का जोखिम हो सकता है।

2. दर्द से राहत पाने के लिए

एनसीबीआई के एक शोध के अनुसार, तिल का तेल दर्द से भी राहत दिलाने में मदद कर सकता है। दरअसल, तिल के तेल में एंटी-नोसिसेप्टिक(दर्द को कम करने वाला) प्रभाव पाया जाता है, जो जोड़ों के दर्द को भी कम कर सकता है। रिसर्च में लिखा है कि मासिक धर्म सिंड्रोम, खरोंच और कटने के कारण होने वाले दर्द को कम करने में भी यह तेल सहायक साबित हो सकता है।

3.अर्थराइटिस से दिलाए राहत

अर्थराइटिस की समस्या को गठिया के नाम से भी जाना जाता है। इस परेशानी को कम करने में काले तिल का तेल मदद कर सकता है। तिल के तेल में मौजूद लिग्नांस एंटीइंफ्लेमेटरी प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इसके कारण यह शरीर में होने वाली इंफ्लेमेशन और इससे संबंधी बीमारियां जैसे अर्थराइटिस को कम कर सकता है। साथ ही इससे अर्थराइटिस के लक्षण को कम करने में भी मदद मिल सकती है।

4. त्वचा के लिए

तिल का तेल त्वचा से जुड़ी कई समस्याओं को कम करने में लाभकारी हो सकता है। दरअसल, तिल का तेल हीलिंग प्रॉपर्टीज प्रभाव युक्त होता है, जो घाव भरने में मदद कर सकता है। अल्ट्रावायलेट किरणों से सुरक्षा प्रदान कर सकता है। इसके कारण सनबर्न संबंधी परेशानी को कम करने में मदद मिल सकती है।

5. बालों के स्वास्थ्य के लिए

तिल का तेल स्कैल्प को पर्याप्त पोषण प्रदान करने में मदद कर सकता है। तिल के तेल में एंटी बैक्टीरियल गुण होता है, जो जीवाणु को दूर करके स्कैल्प को संक्रमण से छुटकारा दिला सकता है। देखा जाए तो रूसी की समस्या दूर करने वाले अधिकतर उत्पाद एंटी बैक्टीरियल और एंटी फंगल युक्त होते हैं। ऐसे में तिल के तेल में मौजूद एंटीबैक्टीरियल प्रभाव को रूसी की समस्या दूर करने में मददगार माना जा सकता है।

नोट...

संवेदनशील लोगों को इससे एलर्जी भी हो सकती है। इसलिए चाहे वो सामान्य व्यक्ति है या फिर गर्भधारण करने के बारे में सोच रही मधुमेह ग्रस्त महिलायें हैं उनको आहार विशेषज्ञ से पूछकर ही तिल के तेल की रोज़ाना सेवन की मात्रा को तय करना चाहिए।

कथा सरिता

एक दिन की बात है। एक मास्टर जी अपने एक अनुयायी के साथ प्रातः काल सैर कर रहे थे कि अचानक ही एक व्यक्ति उनके पास आया और उन्हें भला-बुरा कहने लगा। उसने पहले मास्टर के लिए बहुत से अपशब्द कहे, पर बावजूद इसके मास्टर मुस्कुराते हुए चलते रहे। मास्टर को ऐसा करता देख वह व्यक्ति और भी क्रोधित हो गया और उनके पूर्वजों तक को अपमानित करने लगा। पर इसके बावजूद मास्टर मुस्कुराते हुए आगे बढ़ते रहे। मास्टर पर अपनी बातों का कोई असर ना होते हुए देख अंततः वह व्यक्ति निराश हो गया और उनके रास्ते से हट गया।

उस व्यक्ति के जाते ही अनुयायी ने आश्चर्य से पूछा, "मास्टर जी आपने भला उस दुष्ट की बातों का जवाब क्यों नहीं दिया और तो और आप मुस्कुराते रहे, क्या आपको उसकी बातों से कोई कष्ट नहीं पहुंचा?"

मास्टर जी कुछ नहीं बोले और उसे अपने पीछे आने का इशारा किया।

कुछ देर चलने के बाद वे मास्टर जी के कक्ष तक पहुंच गए। मास्टर जी बोले, "तुम यहीं रूको मैं अंदर से अभी आया।" मास्टर जी कुछ देर बाद एक मैले

कपड़े को लेकर बाहर आये और उसे अनुयायी को थमाते हुए बोले, "लो अपने कपड़े उतारकर इन्हें धारण कर लो।"

कपड़ों से अजीब-सी दुर्गंध आ रही थी और अनुयायी ने उन्हें हाथ में लेते ही दूर फेंक दिया।

मास्टर जी बोले, "क्या हुआ तुम इन मैले कपड़ों को नहीं ग्रहण कर सकते ना? ठीक इसी तरह मैं भी उस व्यक्ति द्वारा फेंके हुए अपशब्दों को नहीं ग्रहण कर सकता।

शिक्षा : इतना याद रखो कि यदि तुम किसी के बिना मतलब भला-बुरा कहने पर स्वयं भी क्रोधित हो जाते हो तो इसका अर्थ है कि तुम अपने साफ-सुथरे वस्त्रों की जगह उसके फेंके फटे-पुराने मैले कपड़ों को धारण कर रहे हो।

सृष्टि नव निर्माण की संकल्पना का यादगार महाशिवरात्रि

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

पर्व और पर्व की महिमा मंडन करने वाले शास्त्रज्ञ, विद्वान, विशेषज्ञ सभी अपने मानसिकता के आधार से उस पर्व की महत्ता को बयां करते हैं। उसी में एक पर्व जो अति विशेष और मानव कल्याण हेतु कार्य करता है, वो महाशिवरात्रि है। उसकी व्याख्या सभी के मुखारविंद से अलग-अलग देखने में आई। कोई इस पर्व को शिव की शादी के रूप में, कोई इसको पूजन के रूप में, या कोई किसी अन्य साक्ष्य के आधार से देखते हैं। लेकिन इस पर्व के अंतिम अक्षर में रात्रि शब्द जोड़ा गया है जिसका सीधा-सा अर्थ है कि परमात्मा जो प्रकाश स्वरूप है उसको रात्रि के साथ जोड़कर देखना ज़रूर अंधकार को दूर करने के परिप्रेक्ष्य में ही होगा। शिव का शाब्दिक अर्थ भी प्रकाश के साथ जोड़ा जाता है। बनारस में एक मंदिर प्रचलित है, काशी विश्वनाथ। काशी का अर्थ होता है प्रकाश की नगरी। और एक उक्ति प्रचलित है, शिव काशी विश्वनाथ गंगा। इसमें भी शिव है, काशी शब्द है जिसको प्रकाश के साथ जोड़ा जाता है। ऐसे महाशिवरात्रि परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का या उसके दिव्य जन्म का यादगार है।

आप इसको इस तरह से देखिये कि भक्ति बहुत समय से हम कर रहे हैं, लेकिन जब भी कोई समस्या आती है तो हमारी नज़र ऊपर की तरफ जाती है, कहते हैं कि हे भगवान ज़रा ध्यान रखना, हमारा साथ देना, अब आप ही हमारा सहारा हो, दोनों हाथ उठाकर हम कहते हैं, तो दोनों हाथ उठाकर जिसको आप याद कर रहे हैं, और बैठे आप मंदिर में हैं! हाथ आपका ऊपर, चेहरा भी ऊपर, आँखें भी ऊपर की तरफ देख रही हैं, तो किसकी तलाश कर रहे हैं! ज़रूर भले अप्रत्यक्ष रूप से कहें, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से ये प्रमाणित है कि ज़रूर हम परमात्मा को निहारने की, उसको समझने की, उसको बताने की कोशिश कर रहे हैं, और ये पक्का है कि वो यहां तो नहीं है। कितनी उस निराकार परमात्मा की बात हम कर रहे हैं, क्योंकि सारे सहारे जब छूट जाते हैं तब परमात्मा की याद आती है और हम अपने आपको उससे जोड़ने की कोशिश करते हैं। बदलाव का मात्र एक माध्यम है, और वो है परमात्मा। उसी परमात्मा को शिव निराकार कहते हैं और जब इस दुनिया में पापाचार, भ्रष्टाचार अपनी सीमायें पार कर लेता है, उस समय परमात्मा का दिव्य अवतरण इस सृष्टि पर होता है। ये वही समय है जिसमें हम सबको शक्ति के लिए, सहारे के लिए उस परमात्मा की आवश्यकता है, क्योंकि वो निराकार है इसलिए वो अपना कार्य एक मानवीय तन के आधार से कर रहा है, जिसको वो खुद ही नाम देता है प्रजापिता ब्रह्मा। और प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय तन से प्रकट होकर वो विश्व नव निर्माण की संकल्पना को साकार रूप देता है। और उसी साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा हम सभी आत्माओं को चुनता है और अपने ज्ञान, गुण और शक्तियों को जो उसके अंदर हैं वो धारण करने के लिए कहता है। ये वही सृष्टि का अंतिम छोर है, अंतिम समय है जब परमपिता परमात्मा शिव हम सभी को विकारों से छुड़ाकर मनुष्य से देवता बनाने का कार्य कर रहे हैं। और उस कार्य की आधारशिला है मनुष्य का स्व परिवर्तन और परमात्मा के दिव्य शक्तियों और गुणों की धारणा। तो हे मानव, इस सृष्टि परिवर्तन की श्रृंखला में अपना बहुमूल्य योगदान देने के लिए खड़े हो जायें, क्योंकि ये वक्त जा रहा है।

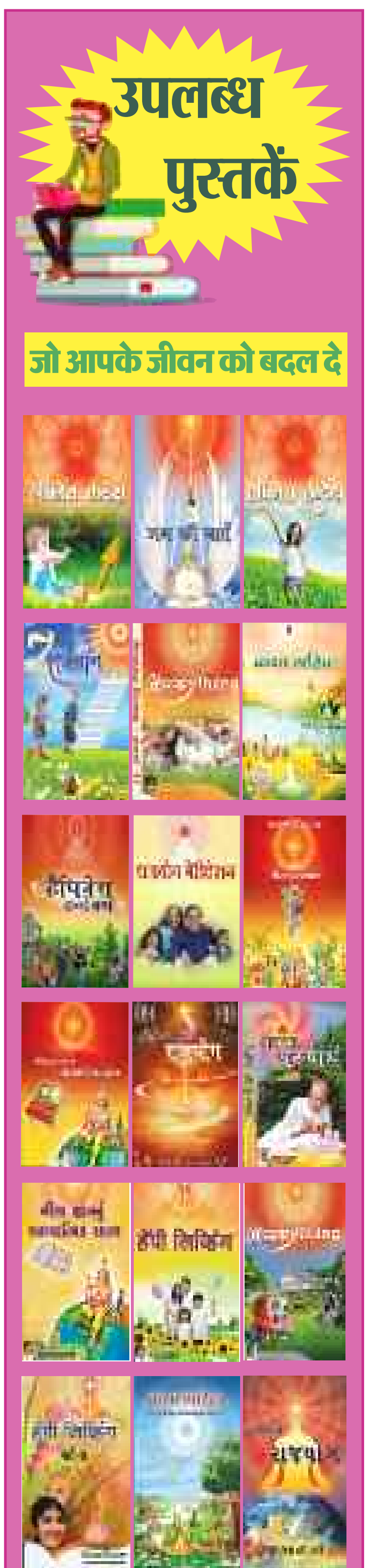

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : अगर हम योग का अच्छा अनुभव करना चाहते हैं, अच्छी एकाग्रता चाहते हैं, परमात्मा से मिलन की अच्छी अनुभूति करना चाहते हैं तो क्या आधार है? हमें क्या-क्या करना चाहिए? ऐसी कौन-कौन सी चीज़ें हैं जो हमें मदद करती हैं योग मार्ग में?

उत्तर : हमें इसमें निराश न होकर निरन्तर अभ्यास, मान लो किसी को योग अभ्यास में सफलता प्राप्त नहीं हो रही, तो वो तीन दिन के लिए हर घंटे में पाँच बार अभ्यास कर लें- मैं आत्मा हूँ। चाहे पाँच सेकण्ड, या दस सेकण्ड अभ्यास करें बस अपने आत्म स्वरूप को देखें और मैं आत्मा पीसफुल हूँ, शांत स्वरूप हूँ, बस पाँच बार कर लें तो एक ही दिन में बहुत अच्छे अनुभव हो जायेंगे। और दूसरे दिन और बढ़ा दें। ये सारा दिन में 108 बार कर लें। तीसरे दिन भी 108 बार कर लें। तो योग की जो सूक्ष्मता है, योग से जो गहन शांति की अनुभूति होती है उसका बहुत अच्छा एक्सपीरियंस हो जायेगा। लेकिन इसके पीछे कुछ धारणायें तो परमआवश्यक हैं जिससे हमें योग की गहराई प्राप्त होती रहे, क्योंकि योग संसार की सबसे गुह्यतम विद्या है। इसमें बहुत सूक्ष्मतायें हैं। इसमें बहुत सूक्ष्म ते सूक्ष्म और महान से महान मनोविज्ञान आ जाता है। इसमें हम एक-दूसरे के मन के भावों को कैच कर सकते हैं। एक-दूसरे के संकल्पों को बदल सकते हैं और उन्हें नये डायरेक्शन भी दे सकते हैं।

जैसे हम चर्चा करते आ रहे हैं - अनेक जगह हम अपने वायब्रेशन फैलाकर संसार के लिए भी बड़ा सुख देने का कार्य कर सकते हैं। तो कुछ धारणाओं में तो पहली धारणा तो प्युरिटी ही है। भले ही लोग हमारी ये बात सुनकर थोड़ा-सा निगेटिवली भी लेते हैं, नाराज़ भी होते हैं कि ब्रह्माकुमारियों ने ये क्या नया पवित्रता का मार्ग निकाल दिया! लेकिन हम कहना चाहेंगे कि ब्रह्माकुमारियों ने नहीं निकाला, ये भगवान का आदेश हुआ है कि मुझे इस संसार को पवित्र बनाना है। इसलिए हरेक पवित्रता को धारण करें।

तो हम आजकल देख रहे हैं हमारे इस राजयोग के मार्ग पर अनेक कुमार और कुमारियां युवक बहुत आ रहे हैं। कुछ लोगों में तो इम्प्युरिटी बहुत है लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिनमें पवित्रता भी बहुत है। वो आकर्षित होकर आ रहे हैं राजयोग की ओर। मुझे बहुत लोग मिलते हैं, कन्यायें मिलीं जिनकी चर्चा पवित्रता पर ही थी। जिनका बहुत ध्यान था अपनी प्युरिटी पर, और जो दृढ़संकल्पधारी थे कि हमें किसी भी तरह, हमें कुछ भी सहन करना पड़े, हमें पवित्र जीवन व्यतीत करना ही है। तो ये भगवान की आज्ञा है। तो इसके बिना कोई योगी नहीं बन सकता। क्योंकि योग उससे लगाना है जो पवित्र है, योग उससे लगाना है जो पवित्रता का सागर है, जो सम्पूर्ण है।

तो हमें योग लगाने के लिए स्वयं को पवित्र ज़रूर बनाना होगा। बिना पवित्रता के हम उसे याद तो कर सकते हैं लेकिन बुद्धि एकाग्र नहीं हो सकती, क्योंकि पवित्रता से ही ब्रेन को शक्तियां मिलती हैं। ब्रेन एनर्जेटिक होता है। प्युरिटी, योगी का एक महत्त्वपूर्ण पिल्लर है। इसके बिना अध्यात्म है ही नहीं। अध्यात्म का अर्थ ही है पवित्रता का मार्ग। इसमें थोड़ा समय तो लगेगा, याद करते-करते पवित्र रहने का बल आ जायेगा। कईयों के साथ ये भी हुआ है। कोई ने एक साल में पवित्रता को धारण किए, किसी ने दो साल में किए, किसी ने छह मास में किए लेकिन शक्तिशाली और महान आत्मायें वो ही होती हैं जो तत्काल कर लेती हैं। उनके अन्दर ये पवित्रता एक बहुत बड़ी शक्ति और वरदान के रूप में काम करने लगती है।

दूसरी चीज़ है पवित्र भोजन। पवित्र भोजन में लहसून, प्याज भी नहीं, ज़्यादा लाल मिर्च भी नहीं और एक सात्विक वातावरण में बनाया गया अन्न, पवित्र और सात्विक व्यक्ति के द्वारा बनाया गया अन्न हमारे योग अभ्यास को बहुत सरल कर देता है। हमें सूक्ष्म स्थिति में ले चलता है तो इसका भी हमें बहुत ध्यान रखना है। लोग ये भी सोचते हैं कि लहसून, प्याज तो दवाईयां हैं, आयुर्वेदिक चीज़ें हैं इससे क्या होगा? देखिए इससे मनुष्य की कामुक वृत्तियां उत्तेजित होती हैं। और हमें बनना ही पवित्र है तो हम इन चीज़ों का सेवन नहीं कर सकते। तो जैसा अन्न वैसा मन। हम जानते हैं देवताओं को अगर भोग लगाना हो तो हम लहसून, प्याज नहीं डालेंगे, हम अंडे का भोग नहीं लगा सकेंगे। देवताओं को भी पवित्र भोग लगाया जाता है। आजकल जो मान्यता हो गई देवी को बलि चढ़ाने की, ये बिल्कुल गलत परम्परा है। इससे न देवी खुश होती और न स्वयं मनुष्य खुश होता, न सफलता प्राप्त होती। और शुद्ध मन नहीं है, अच्छे वातावरण में भोजन नहीं बनाया गया है तो उसकी एकाग्रता पर असर अवश्य आयेगा।

प्रश्न : तंत्र-मंत्र, जादू-टोना ये सब होता है क्या?

उत्तर : ये आजकल के दुनिया में एक बड़ा प्रश्न है और कितने तांत्रिक हैं जिनकी रोजी-रोटी चल रही, रोजी-रोटी ही नहीं चल रही अथाह कमाई कर रहे हैं वो। ये तंत्र विद्या अथर्व वेद से निकली विद्या है। इस विद्या को वेदों से नहीं जोड़ा जाता था। जो आचार्य थे कहते थे इसको हम वेद नहीं कहेंगे, वेद माना एक पवित्र विद्या, आध्यात्मिक विद्या, लेकिन फिर बहुत सारे आचार्यों ने व्यास जी को विवश कर दिया था कि नहीं इसको वेदों का ही हिस्सा बनाया जाये। तो वेदों से निकली हुई विद्या है तो ये विद्या कल्याणकारी थी, ये मनुष्य को सुख देने के लिए थी, उसकी बीमारी हटाने के लिए, कोई भूत-प्रेत की बाधा हो गई उसको समाप्त करने के लिए थी। लेकिन चलते-चलते क्या हुआ जैसे संसार कलियुग आगे बढ़ा, भक्ति आदि ये सब तमोप्रधानता की राह में आगे चलने लगे। हर चीज़ में स्वार्थ और धन आगे आ गया। भलाई करने का लक्ष्य छूट गया, तो इसका मिसयूज़ होने लगा। तो ये विद्या है, ऐसे नहीं कहा जायेगा कि ये विद्या नहीं है।

इसका मिसयूज़ होने की वजह से ये विद्या बदनाम हो गई है और बहुत घरों में ये पहुंच गई है। टीवी में ये आने लगे हैं। जहाँ-तहाँ तो लोग वशीकरण कराने लगे और कई दूसरों को तंग करने में इस विद्या का प्रयोग किया इसलिए इस विद्या को बदनामी मिली है। और इस तरह किसी भी चीज़ का दुरुपयोग ज़्यादा होता है तो वो विद्या हमेशा नष्ट होने के कगार पर आ जाती है। यही स्थिति हम इस विद्या की देख रहे हैं अब।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

धरा पर परमात्मा का अवतरण होता...

जानें....

सत् धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश

मैं जब इस संसार में अवतरित होता हूँ तो अति साधारण रूप में आता हूँ, जिससे मूढ़मती मनुष्य मुझे पहचान नहीं पाते। कोटों में कोई और कोई में भी कोई विरला मेरे यथार्थ स्वरूप को जानकर और पहचानकर मेरी शरण को ग्रहण करते हैं।

शिवरात्रि के इस पावन पर्व के उपलक्ष्य में आज हम देखेंगे कि शिव मंदिर के अन्दर हमेशा शिवलिंग को गर्भ में दिखाया गया है और वह भी एक सीढ़ी नीचे उतरकर लोग उसकी पूजा करते हैं। बाकी सभी देवी-देवताओं के मन्दिर में जायेंगे तो हमेशा देवताओं को आसन पर बिठाया है। लेकिन क्या शिव के लिए कोई आसन नहीं मिला? भावार्थ ये है कि परमात्मा शिव जब इस संसार में अवतरित होते हैं, तो वो जो अपना कार्य करते हैं बहुत गुप्त और बहुत निरहंकारी होकर करते हैं। जिस तरह दुनिया के अन्दर किसी को भी आसन प्राप्त होता है तो धीरे-धीरे उसका अहंकार बढ़ता है, लेकिन परमात्मा के प्रति दिखाया है कि कितना निरहंकारी है। उसे आसन भी नहीं है, एकदम गर्भ में जैसे एक सीढ़ी नीचे उतरकर गृह गर्भ में उसकी प्रतिमा रखी जाती है, पूजा करने के लिए।

वो ऊंचे ते ऊंचा ज़रूर है, सर्वोच्च शक्ति है, लेकिन सबसे निर्मान और निरहंकारी भी है जो अपने लिए कोई आसन नहीं रखा। लेकिन इतना श्रेष्ठ कर्म कराया मनुष्य से जो उसको देव स्वरूप में बनाते हुए उसे श्रेष्ठ आसन दे दिया। तो ये परमात्मा की महानता है। साथ ही कहा जाता है कि परमात्मा जब इस संसार में अवतरित होते हैं तो उन्हें कोई आधार तो चाहिए, तो हमेशा शिव मंदिर के अन्दर देखा जाता है कि बाहर नंदी रखा होता है; और बताया यही जाता है कि ये नंदी परमात्मा का दिव्य वाहन है। इसलिए नंदी के भृकुटी के अन्दर, भृकुटि के मध्य में शिवलिंग की आकृति दिखाते हैं। भावार्थ यही है कि जब परमात्मा शिव इस संसार में अवतरित होते हैं तो एक साधारण तन का आधार लेते हैं और उसकी भृकुटि में आकर बैठते हैं। लेकिन जो आधार लिया है वो भी एक मेल का आधार लिया है, इसलिए बैल दिखाते हैं। जिसके लिए श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने कहा सातवें अध्याय में कि हे अर्जुन, मैं जब इस संसार में अवतरित होता हूँ तो अति

साधारण रूप में आता हूँ, जिससे मूढ़मती मनुष्य मुझे पहचान नहीं पाते। कोटों में कोई और कोई में भी कोई विरला मेरे यथार्थ स्वरूप को जानकर और पहचानकर मेरी शरण को ग्रहण करते हैं। अब यहाँ स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण को तो कौन नहीं पहचानता! परंतु श्रीकृष्ण का साधारण नर स्वरूप जब कलियुग में आ जाता है क्योंकि अनेक पुनर्जन्म लेते हुए जब श्रीकृष्ण भी नर स्वरूप में आ जाते हैं तब वो साधारण स्वरूप होने के कारण परमात्मा का दिव्य अवतरण उनकी भृकुटि में होता है। और उनकी भृकुटि में बैठकर गीता का सत्य ज्ञान मनुष्य आत्मा को देते हैं; और इस तरह से आत्माओं का शुद्धिकरण करते हैं।

साथ-साथ शिवलिंग में तीन लकीर लगाई जाती हैं, भावार्थ यही है कि जो आदि-मध्य-अन्त का ज्ञाता है, जिसके पास तीनों कालों का ज्ञान है, जो त्रिकालदर्शी है, तीनों कालों का दर्शन कराने वाले हैं तो परमात्मा जब इस संसार में अवतरित होते हैं- अधर्म का नाश सतधर्म की पुनः स्थापना करने के लिए, तो अधर्म का नाश करने का आधार है-ज्ञान। तभी कहा जाता है, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश'। मनुष्य जीवन में जो पाप कर्म का कारण है या कारक है, अधर्म का कारक है वो है अज्ञानता। तो वो परमात्मा जिनके पास तीनों कालों का ज्ञान है वो इस संसार में अवतरित होकर, आत्मा को तीनों कालों का ज्ञान देकर उसकी अज्ञानता को नष्ट करते हैं। इस तरह अधर्म का नाश और सतधर्म की पुनः स्थापना करते हैं। आत्मा को अपनी वास्तविकता का परिचय कराते हैं।

अन्त के बाद फिर पुनः आदि होती है, इस रहस्य का भी उद्घाटन करते हैं। जिससे मनुष्य आत्मा जो पाप कर्म करके पतित बनी है, उस अज्ञानता का नष्ट करने से जब ज्ञान आता है तो मनुष्य आत्मा के कर्मों में भी परिवर्तन अर्थात् श्रेष्ठ कर्म करने लगते हैं। आत्म शुद्धिकरण उसका होता है ज्ञान से। जैसे ही आत्म शुद्धिकरण हुआ, श्रेष्ठ कर्म करने लगते हैं तो कहा जाता है पतित से पावन बनते हैं। यही पतित से पावन, परमात्मा के लिए कहा गया कि हे पतित पावन आओ आकर हमको पतित से पावन बनाओ। अधर्म से सत धर्म की ओर ले जाने का कार्य करते हैं। और इसके लिए परमात्मा ने त्रिमूर्ति को रचा, ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि का सृजन किया क्योंकि जब आत्मायें पावन बनती जाती हैं, श्रेष्ठ कर्म करने लगते हैं तो नैचुरल है अधर्म का नाश हुआ तो सत धर्म यानी सतयुग के दिव्य स्थापना का कार्य परमात्मा ब्रह्मा के माध्यम से करते हैं। इसलिए ब्रह्मा को सभी वेदों का ज्ञाता बताया।

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

'ऑल इज़ वेल' बोलना अपने मन को ठीक करने की दिशा में पहला कदम

लोग विशेषताएं बताते नहीं हैं, कमज़ोरियां पहले सुना देते हैं। जब तक हम उनको उनकी विशेषताएं नहीं बताएंगे, उनमें विश्वास और एनर्जी को पैदा नहीं करेंगे, तब तक वो अपनी कमज़ोरी को ठीक नहीं कर सकेंगे।

अगर हमें अपने जीवन में बदलाव लाना है, तो कहने के तरीके पर गौर करना होगा। अगर डर को सामान्य मानकर चलेंगे तो उसे दूर करने का पुरुषार्थ भी नहीं करेंगे। कभी किसी को न कहें कि डर सामान्य है। डर असल में भावनात्मक कमज़ोरी है। हम कमज़ोरी को भी सामान्य बोलने लगे हैं। बातें कहने का यह तरीका वाकई फर्क पैदा करता है।

आपके जीवन में अगर उथल-पुथल चल रही हो, तब भी परमात्मा का शुक्रिया अदा करें। आप अपने दिल से सिर्फ शुक्रिया शब्द उत्पन्न कीजिए। दिल से ग्रेटीट्यूड(कृतज्ञता) का भाव उत्पन्न कीजिए। यह बहुत ही हाई एनर्जी वाला शब्द है। अगर हम सिर्फ शिकायत करते रहेंगे तो हमारी बैटरी डाउन होती जाएगी। एक फिल्म में संवाद था 'ऑल इज़ वेल'। अगर सबकुछ गड़बड़ हो तो भी दिल पर हाथ रखकर बोलो 'ऑल इज़ वेल'। मतलब सबकुछ अच्छा हो जाएगा। इसका गहराई से अर्थ समझना होगा। बाहरी परिस्थितियां भले अनुकूल न हों, कोई बात नहीं, लेकिन पहले अपने मन को तो ठीक कर लो। 'ऑल इज़ वेल' बोलना अपने मन को ठीक करने की दिशा में पहला कदम है। जब अपनी मनःस्थिति ठीक होती है तो कठिन परिस्थिति से निकलना आसान हो जाता है।

किसी की निंदा करना सामान्य बात नहीं है। लोगों की सराहना करना, उन्हें प्रेरित करना ही अच्छा आचरण है। कभी किसी बच्चे से ऐसा नहीं कहें कि यह चीज़ आपके अंदर ठीक नहीं है, यह गलत है। आप उसको पहले अच्छाइयों के बारे में बताओ। लोग विशेषताएं बताते नहीं हैं, कमज़ोरियां पहले सुना देते हैं। जब तक हम उनको उनकी विशेषताएं नहीं बताएंगे, उनमें विश्वास और एनर्जी को पैदा नहीं करेंगे, तब तक वो अपनी कमज़ोरी को ठीक नहीं कर सकेंगे। उनके पास शक्ति नहीं आएगी। हम एक लाइन में तारीफ करके बात खत्म कर देते हैं, लेकिन गलती भर-भरके सुनाते हैं। जब आप किसी को उसके गुण या उसकी अच्छाइयों के बारे में बता रहे होते हैं, तो आप सामने वाले व्यक्ति में उच्च ऊर्जा का संचार करते हैं। आप खुद में भी वही ऊर्जा का उच्च स्तर पैदा करते हैं। इस प्रक्रिया में आपने उनकी बैटरी को चार्ज कर दिया और जाने अनजाने आपकी बैटरी भी चार्ज हो गई। फिर आपने कहा, ये एक बात भी ठीक कर लो। अब उसके पास उस एक चीज़ में सुधार करने की ताकत आ गई। लेकिन अगर हमने कहा, 'हाँ-हाँ आप बाकी सारे विषय में बहुत अच्छे हो लेकिन इस विषय में ये समस्या है, यह गलत है, आपने ऐसा क्यों किया, तुम ऐसे हो...' फिर क्या होता है? यह सुनकर उनकी बैटरी डाउन हो जाती है। यहाँ कहने-कहने का फर्क है।

ऐसा नहीं है कि बच्चे को उसकी सिर्फ अच्छाइयां ही गिनानी हैं, लेकिन जब वो अपनी अच्छाइयों पर ध्यान देता है, तो खुद में सकारात्मक बदलाव लाना उसके लिए मुश्किल नहीं होता। लेकिन हम उनकी कमज़ोरियों पर ज़्यादा ज़ोर देने लगते हैं। माता-पिता, टीचर्स सबके इरादे अच्छे हैं। लेकिन हमारे गलत तरीके से कहने से उसकी शक्ति घट जाती है।

अपने कहने के तरीकों की सूची बनाते जाएं। किसी की सराहना करना इमोशनल हेल्थ है, आलोचना करना इमोशनल इलनेस। उम्मीद करना इमोशनल इलनेस है। स्वीकार करना इमोशनल हेल्थ है। दूसरों को दुःख पहुंचाना इमोशनल इलनेस है और प्रशंसा करना इमोशनल हेल्थ है। रोज़ रात को सोने से पहले क्षमा ज़रूर करें। सारे दिन में अगर किसी ने भी कुछ ऐसा व्यवहार किया हो जो हमें पसंद नहीं आया हो। तब भी हमें रात को सोने से पहले उन्हें क्षमा करना है। अगर रात को कर दिया तो हमारे मन में कोई बात रहेगी ही नहीं। क्योंकि जब हम सोते हैं तब हमारे अवचेतन में दिमाग खुलता है। और सारे दिन की बातचीत अंदर चली जाती है। कई चीज़ें हमारे जीवन में हैं, हम कहते हैं कि भुलाए नहीं भूलती। न ही उन्हें माफ कर पा रहे हैं, न भूल पा रहे हैं। क्यों नहीं भूल रहे, क्योंकि हमने उस रात सोने से पहले उनको माफ नहीं किया था। जब हम सोए तो वो हमारे अवचेतन में चला गया। इसीलिए लोग कहते हैं जो भी झगड़े हों रात को सोने से पहले सुलझा लेने चाहिए। क्षमा करना सीखिए। यह आपकी अंदरूनी सेहत के लिए वाकई ज़रूरी है।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: uamorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये
Website: www.omshantimedia.org

ब्रह्माकुमारीज़ राजऋषि पंचायत उमरनी को बनाएगी आदर्श ग्राम

कचरा कलेक्शन वाहन को दिखाई हरी झंडी

- एलआईसी एचएफएल और टीम फीडबैक फाउंडेशन के सहयोग से डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन वाहन की शुरुआत
- रेडियो मधुबन पंचायत में घर-घर बांटेगा तीन हज़ार डस्टबिन

कचरा कलेक्शन वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ भाई-बहनें व सरपंच प्रतिनिधि।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग ने आबू रोड से लगी ग्राम पंचायत उमरनी को आदर्श ग्राम बनाने का बीड़ा उठाया है। इसकी शुरुआत स्वच्छता अभियान से की जा रही है। इसके तहत शांतिवन से उमरनी गांव में डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन वाहन को हरी झंडी दिखाते हुए कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. राजू भाई ने गांव को स्वच्छ, सुंदर और आदर्श गांव बनाने में सहयोग प्रदान करने के लिए सभी ग्रामवासियों का आह्वान किया। आवास-निवास के प्रभारी ब्र.कु. देव ने भी अपने विचार रखे। प्रोजेक्ट मैनेजर लखविंदर सिंह ने कहा कि हम वाहन के माध्यम से कचरा कलेक्शन कर उसका सुनियोजित तरीके से डंपिंग करेंगे। साथ ही भविष्य में गीले कचरे से खाद बनाने की योजना है। कलेस्टर हैड अमीता तिवारी ने कहा कि सभी के प्रयासों से उमरनी को स्वच्छ गांव बनाने का सपना पूरा होगा। इस दौरान प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर राहुल ढिलोर, सरपंच प्रतिनिधि बाघाराम गरासिया, उपसरपंच प्रतिनिधि गणेश बंजारा, रेडियो मधुबन के निदेशक ब्र.कु. यशवंत, ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी, पीआरओ ब्र.कु. कोमल, ब्र.कु. आनंद, ब्र.कु. रोहित सहित अन्य लोग मौजूद रहे। संचालन ब्र.कु. चंद्रेश ने किया।

मन की स्वच्छता पर भी करें काम

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी ने कहा कि हम सभी को सबसे पहले अपने मन की स्वच्छता पर काम करना होगा। जब हमारे विचार, सोच और संकल्प स्वच्छ, सुंदर होंगे तो हम जो भी कर्म करेंगे वह कर्म सुखदायी, श्रेष्ठ और महान होंगे।

गांव में घर-घर से सूखा कचरा, गीला कचरा, मेडिकल वेस्ट और सामान्य कचरे को चार तरीके से संग्रहित किया जाएगा। एलआईसी एचएफएल ग्रीन टुमॉरो प्रोजेक्ट के अंतर्गत टीम फीडबैक फाउंडेशन और कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा संयुक्त रूप से गांव में स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। वहीं रेडियो मधुबन की ओर से घर-घर में तीन हज़ार से अधिक डस्टबिन बांटे जाएंगे।

चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी घड़ूआं में आरोग्य भारती संस्थान ने किया राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. रमा दीदी को सम्मानित

मोहाली-पंजाब। चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी घड़ूआं में पंजाब के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित व चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के चांसलर सतनाम सिंह की उपस्थिति में आरोग्य भारती संस्थान द्वारा मोहाली-रोपड़ क्षेत्र की सह संचालिका 60 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ में समर्पित राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. रमा दीदी को श्रीफल व शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी घड़ूआं मोहाली में दो दिवसीय आरोग्य भारती अखिल भारतीय प्रतिनिधि मंडल बैठक का शुभारंभ पंजाब के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने दीप प्रज्वलित कर किया। समूचे भारत से आरोग्य भारती संस्था के लगभग 1000 सदस्य बैठक में भाग लेने पहुंचे। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. रमा दीदी ने कहा कि मेडिसिन से भी ज़रूरी मेडिटेशन है क्योंकि सशक्त मन रोगी तन को भी स्वस्थ बना सकता है। अशांत, परेशान व दुःखी मन बेलगाम घोड़े की तरह होता है, उसे राजयोग से साधा जा सकता है। राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हर पैथी में एक्सपर्ट हैं, किंतु वही पैथी अच्छी है जिससे रोग का सम्पूर्ण निदान हो जाए। उन्होंने ईट हाफ, वॉक डबल, लाफ ट्रिपल, लव विदाउट लिमिट की बात की।

राज्यपाल ने किया आरोग्य भारती बैठक का शुभारंभ

शक्तिशाली मन ही हर परिस्थिति में खुश रह सकता है

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। बाल दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के नव विश्व भवन सेवाकेन्द्र में 'चमत्कार मेरे विचारों का' कार्यक्रम में सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी ने कहा कि जैसे गुलाब का फूल कांटों के बीच रहते हुए भी खिला रहता है, उसी प्रकार संसार में कैसी भी परिस्थिति हो, दुःख हो लेकिन हमें भी इन सभी का सामना करते हुए खुश रहना है। हमारा मन खुश तभी रह सकता है जब मन शक्तिशाली होगा। मन को शक्तिशाली बनाने के लिये मन को बाहरी बातों से हटाकर अपने काम पर ध्यान लगाने की आवश्यकता है। चिराग सोशल वेलफेयर सोसायटी के डायरेक्टर मंगल पाण्डे ने कहा कि सभी बच्चों को अपने लक्ष्य के प्रति जागरुक होकर, अन्य चीज़ों को छोड़कर अपन पढ़ाई के प्रति ध्यान देना चाहिए। छ.ग. प्रचार एवं विकास संस्थान के डायरेक्टर अनिल मिश्रा ने कहा कि जो ज़िम्मेदार नागरिक हैं, उन्हें अपने बच्चों के अलावा ज़रूरतमंद बच्चों का भी ध्यान रखना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता वन्दना दत्ता ने कहा कि आप बच्चे संसार, समाज में एक- दूसरे का सहारा बनने की कोशिश अभी से करें तो आप सभी की उन्नति ज़रूर होगी। सरस्वती शिशु मंदिर की प्राचार्या मीरा साहू ने बच्चों को एक्टिविटीज़ एवं प्रैक्टिकल घटनाओं के माध्यम से समझाते हुए कहा कि बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनने से पहले अपने माता-पिता का एक आदर्श बेटा, गुरू के लिए एक अच्छा शिष्य बनने के साथ-साथ एक अच्छा इंसान बनने की आवश्यकता है। सरस्वती शिशु मंदिर की प्रधानाध्यापक बहन सुप्रिया ने सभी बच्चों को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. ममता बहन ने किया। काफी संख्या में बच्चों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

बाल दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में बच्चों के लिए कार्यक्रम 'चमत्कार मेरे विचारों का'

स्वयं को ज़िम्मेवार समझने से ही परिवर्तन होता आसान- शिवानी बहन

जब हम दूसरों को दोषी ठहराते हैं तो अपनी पावर को कम कर देते हैं। दुःखी हम खुद के विचारों से ही होते हैं। स्वयं के विचारों के निर्माता हम स्वयं हैं। दूसरों को दुआ देने से हमारी पावर बढ़ती है। जितनी ही पावर आती है, उतनी ही पॉज़िटिविटी बढ़ती है। इसलिए अपनी स्थिति के लिए स्वयं को ज़िम्मेवार समझें। जितना हम स्वयं को ज़िम्मेवार समझते हैं, उतना ही हम स्वयं का परिवर्तन कर पाते हैं **- जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी दीदी।**

भारतीय सेना एवं सुरक्षा बलों के दो दिवसीय राष्ट्रीय डायलॉग का समापन

ओम शांति रिट्रीट सेंटर के सुन्दर आध्यात्मिक वातावरण में हुआ आयोजन

'इंस्पिरेशनल लीडरशिप एंड सेल्फ एम्पावरमेंट' पर हुई चर्चा

कार्यक्रम में 500 से भी अधिक संख्या में वरिष्ठ अधिकारी, जवान और उनके परिवार के सदस्य हुए सम्मिलित

ओआरसी-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के भोराकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में सेना एवं सुरक्षा बलों के अधिकारियों तथा जवानों के लिए 'इंस्पिरेशनल लीडरशिप एंड सेल्फ एम्पावरमेंट' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में कोस्ट गार्ड के महानिदेशक राकेश पाल ने कहा कि काफी समय से मैं ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में हूँ। जब भी मैं विदेशों में जाता हूँ तो सबसे पहले मैं ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर जाता हूँ। क्योंकि वहां जाने से मुझे एक अलौकिक वातावरण का अनुभव होता है। मन सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है। नौसेना के वाइस एडमिरल वी. श्रीनिवास ने कहा कि तन के स्वास्थ्य का तो हम ध्यान रखते ही हैं, लेकिन मन को स्वस्थ कैसे बनाएं उसका ज्ञान ब्रह्माकुमारीज़ के पास है। एक स्वस्थ मन ही खुशनुमा जीवन का माध्यम है।

भारतीय नौसेना के पूर्व वाइस एडमिरल अनिल चावला ने कहा कि संस्थान द्वारा चलाए जा रहे इस प्रकार के कार्यक्रम चुनौतियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करते हैं। बीएसएफ के महानिरीक्षक सोलोमन वाई.के. मिंज ने कहा कि इस प्रकार की शिक्षा से आत्म संयम आयेगा। जो समाज को एक बेहतर दिशा प्रदान करेगा। दिल्ली पुलिस के पूर्व कमिश्नर बी.के. गुप्ता ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद मेरा क्रोध काफी कम हो गया है। किसी से भी अटैचमेन्ट ही दुःख का कारण है। कार्यक्रम में विशेष रूप से राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी एवं माउण्ट आबू से आये वायु सेना के पूर्व स्क्वाड्रन लीडर अशोक गाभा ने भी शुभकामनाएं व्यक्त की। साथ ही अपने अनुभवयुक्त विचारों से सबको प्रेरित किया। कार्यक्रम में राजयोग के अलग-अलग सत्र के द्वारा सबको ईश्वरीय अनुभूति कराई गई। भारतीय नौसेना के कैप्टन शिव कुमार ने सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम में भारतीय थल सेना, वायुसेना, नौसेना, अर्धसैनिक बल एवं प्रादेशिक सुरक्षा बलों के 500 से भी अधिक अधिकारियों और जवानों ने शिरकत की। माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. शैलेन्द्र भाई ने अपने शब्दों से सबका आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन ब्र.कु. सारिका बहन ने किया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th Dec, 2023
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org